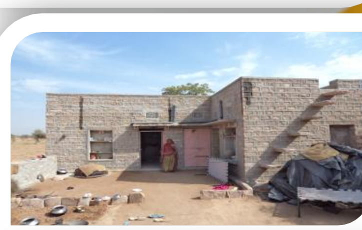

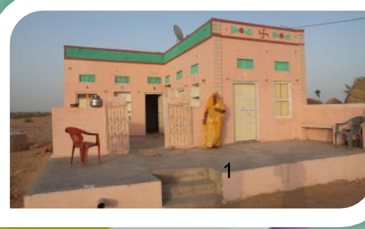

# मरू संदेश
# Maru Sandesh

चतुर्थ अंक - 2021

हडको

**हडको, जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय**

**हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड**

# हडको वित्त पोषित CSR योजनाएं

**संरक्षक**
श्री सुधीर कुमार भटनागर,
क्षेत्रीय प्रमुख

**संपादक**
श्रीमती अंजु गर्ग,
प्रबंधक (सचिवीय) एवं
हिन्दी नोडल अधिकारी

**सह संपादक**
श्री शैलेन्द्र सिंघवी,
सहायक प्रबन्धक (वित्त) एवं
हिन्दी नोडल सहायक

**विशेष सहयोग**
डॉ. प्रकाश जैन, प्रबंधक (प्रशासन)
श्री आशीष कुमार, सहायक प्रबन्धक
एवं क्षेत्रीय कार्यालय के
सभी कार्मिक

# बधाई हो

**पुलह भटनागर,**
पुत्र श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख
का चयन यूरोप के अग्रणी विश्वविद्यालय, KTH Sweden में EIT INNO Energy के अंतर्गत मास्टर्स इन रिन्यूएबल एनर्जी के लिए हो गया है, साथ ही उनके द्वारा विगत वर्ष 2020–21 में B.Tech (Mech.) एवं Masters in Physics के $9^{th}$ Semester में कुल 8.00 CGPA प्राप्त की।

**रितिका लावडिया,**
पुत्री श्री राजकुमार लावड़िया, प्रबन्धक (प्रशा.)
ने भारतीय कम्पनी सचिव संस्थान (ICSI)
से प्रोफेशनल प्रोग्राम परीक्षा उत्तीर्ण की ।

**गुंजन ठागरिया**
पुत्र श्री नरेश कुमार ठागरिया, सहायक महाप्रबन्धक (IT)
ने इंडियन बैंक में विशेषज्ञ संवर्ग के तहत सहायक क्रेडिट अधिकारी वित्त के रूप में दिनांक 16.11.2021 को नियुक्ति प्राप्त की।

**गिरिराज वर्मा**
पुत्र श्री सुरज मल वर्मा, AF(SG)
ने उद्योग विभाग में कनिष्ठ सहायक के पद पर
दिनांक 07.08.2020 को नियुक्ति प्राप्त की।

**खुशबू रत्नम**
पुत्री श्री आशीष कुमार, सहायक प्रबन्धक
ने कक्षा 12वीं में I.P. विषय में स्कूल में Top किया।

# संदेश

यह प्रसन्नता और गौरव का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह ई–पत्रिका **"मरु सन्देश"** के चतुर्थ अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिंदी बहुत ही सहज, सरल और उदार भाषा है। साथ ही यह एक सशक्त और वैज्ञानिक भाषा भी है। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के सहयोग से इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी अधिक विस्तार हुआ है।

गृह पत्रिकाओं के प्रकाशन से कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। मुझे विश्वास है कि **ई–पत्रिका "मरु संदेश"** राजभाषा हिंदी के प्रचार – प्रसार में सफल भूमिका निभाएगी। इस पत्रिका के चतुर्थ अंक के सफल प्रकाशन के लिए जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

Kamran

**कामरान रिज़वी, आईएएस**
**अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, हडको**

# संदेश

मुझे यह जानकर अपार खुशी हो रही है कि हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **''मरू सन्देश''** के चतुर्थ अंक का प्रकाशन ई–पत्रिका के रूप में कर रहा है। ''एक स्वतन्त्र देश अपनी भाषा के बिना गूंगा होता है'', अतः हिंदी को समृद्ध और विकसित करना हम सबकी जिम्मेदारी है।

इस दृष्टि से ई–पत्रिका **''मरू सन्देश''** के चतुर्थ अंक का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। इस उपलब्धि के लिए जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय एंव संपादक मंडल बधाई का पात्र है।

शुभकामनाओं सहित।

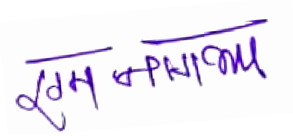

**एम. नागराज**
**निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)**

# संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **"मरू सन्देश"** का चतुर्थ अंक ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशित कर रहा है। राजभाषा के विकास में यह प्रयास सराहनीय है।

इस ई–पत्रिका **"मरू सन्देश"** में हडको की कार्य प्रणाली, उद्देश्य, लक्ष्य, अनुभव एवं रचनात्मकता को समाहित किया गया है। यह प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन के विकास में उपयोगी सिद्ध होगा । मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

**डी. गुहान**
**निदेशक (वित्त)**

# संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **"मरू सन्देश"** का चतुर्थ अंक ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशित कर रहा है। इस पत्रिका की पठन सामग्री हर वर्ग के लिए रोचक एवं प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को **"मरू संदेश"** पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजभाषा के प्रचार – प्रसार के दायित्व का निर्वाह करते हुए इस पत्रिका का प्रकाशन किया जाता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

**अजय मिश्रा**
**मुख्य सतर्कता अधिकारी**

# संदेश

यह गर्व का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका ''मरु सन्देश'' का चतुर्थ अंक ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। यह ई–पत्रिका निश्चित रूप से सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं अभिरूचि दर्शाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध होगी।

मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय एवं पत्रिका के संपादक मंडल की ओर से किये गए श्रम साध्य प्रयासों की सराहना करती हूँ और इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

**उपिन्दर कौर**
**महा प्रबंधक (राजभाषा)**

# संदेश

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की ई–पत्रिका **"मरू सन्देश"** का चतुर्थ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता एवं हर्ष हो रहा है।

अभिव्यक्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है और आत्म अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा से बेहतर और कोई माध्यम नहीं हो सकता। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी मातृभाषा हिंदी ही हमारी राजभाषा भी है, इसलिए हमारे लिए हिंदी में कार्यलियिक कार्य करना सहज और सरल है साथ ही यह और भी हर्ष एवं गर्व का विषय है कि आज भारत में ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर हिंदी अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की प्रगति को देखते हुए वह दिन दूर नहीं लगता जब हिंदी एक विश्व भाषा के पद पर प्रतिस्थापित होगी।

मुझे विश्वास है कि ई–पत्रिका **"मरू–संदेश"** का चतुर्थ अंक हिन्दी की इस विकास यात्रा में अपना छोटा सा योगदान अवश्य देगी एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में आशानुरूप भूमिका निभाएगी। आपके सुझाव बहुमूल्य है तथा वे हमें और बेहतरी के लिए प्रेरित करेंगे।

**सुधीर कुमार भटनागर**
**क्षेत्रीय प्रमुख**

# प्रधानमंत्री आवास योजना – क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी

भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना–क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी के अन्तर्गत शहरी क्षेत्र में सभी के लिए घर मिशन को महात्मा गांधी के 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 31 मार्च 2022 तक 20 मिलियन आवासों का निर्माण करना एवं सभी के लिए आवास का लक्ष्य पूरा करने के लिए क्षेत्रों की आवश्यकतानुसार इसे शहरी एवं ग्रामीण दो भागों में बांटा गया है।

प्रथम, प्रधानमंत्री आवास योजना अर्बन (नगरीय) की योजना के अन्तर्गत लगभग 4331 कस्बे और शहर हैं, जिसमें शहरी विकास प्राधिकरण, विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण, औद्योगिक विकास प्राधिकरण, विकास क्षेत्र, अधिसूचित योजना और शहरी प्राधिकरण और नियमों के लिए उत्तरदायी सभी अन्य प्राधिकरण शामिल है।

दूसरा, मार्च 2016 में इंदिरा आवास योजना का नाम बदल कर प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण कर दिया गया। इसका लक्ष्य दिल्ली और चंडीगढ को छोड़ कर पूरे ग्रामीण भारत के लिए किफायती और सुगम हाउसिंग को बढ़ावा देना है। इसका उद्वेश्य बेघरों को वित्तीय सहायता और पुराने घरों में रहने वालों को पक्के घरों के निर्माण में सहायता प्रदान करना है। इसके तहत मैदानी इलाकों में रहने वाले लाभार्थी लगभग 1.2 लाख और उत्तर–पूर्वी, पहाड़ी क्षेत्रों, इंटीग्रेटेड ऐक्शन प्लान और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले लाभार्थी लगभग 1.3 लाख रूपये तक का लाभ उठा सकते हैं।

इस मिशन के तहत क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी स्कीम जारी की गई जिसके मुताबिक मध्यम आय वर्ग को घर बनाने या अधिग्रहण (दुबारा खरीदने) के लिए आवास ऋण के ब्याज पर सब्सिडी दी जा रही है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) और कम आय वाले वर्ग (एलआईजी) को घर के निर्माण या अधिग्रहण के लिए आवास ऋण के ब्याज पर सब्सिडी दी जा रही है। इसके अतिरिक्त इन्क्रीमेंटल हाउसिंग के रूप में वर्तमान निवास में नए निर्माण और अतिरिक्त कमरे, रसोई घर तथा शौचालय आदि के लिए भी आवास ऋण के ब्याज पर सब्सिडी का लाभ उपलब्ध है।

इस योजना के तहत एक लाभार्थी परिवार में पति, पत्नी, अविवाहित बेटे या बेटियाँ शामिल होंगी। कमाई करने वाले व्यक्ति (चाहे वैवाहिक स्थिति कुछ भी हो) को एक अलग हाउसहोल्ड के रूप में माना जा सकता है।

इस योजना की खास बात यह है कि ब्याज सब्सिडी का लाभ बकाया मूल राशि पर पहले मिल जाता है। ब्याज सब्सिडी की उपलब्धता और राशि, स्कीम के तहत विभिन्न कैटेगरी के आय मानदंडों की पूर्ति के अधीन है। इस योजना के तहत आवास ऋण पर ब्याज में लगभग 2.67 लाख का सीधे लाभ मिलता है एवं 20 वर्ष की अवधि/240 माह की ऋण राशि पर देय ईएमआई पर निम्न विवरणानुसार मासिक एवं वार्षिक बचत प्राप्त की जा सकती है।

| श्रेणी (1) | ऋण राशि (2) | ब्याज सब्सिडी (3) | बकाया ऋण राशि (4) | वास्तविक ईएमआई 10% ब्याज पर (5) | सब्सिडी के बाद देय ईएमआई (6) | मासिक बचत (7) (5-6) | वार्षिक बचत (8) (7*12) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईडब्ल्यूएस | 300000 | 133640 | 166360 | 2895 | 1605 | 1290 | 15480 |
| एलआईजी | 600000 | 267280 | 332720 | 5790 | 3211 | 2579 | 30948 |
| एमआईजी.–I | 900000 | 235068 | 664932 | 8685 | 6417 | 2268 | 27216 |
| एमआईजी.–II | 1200000 | 230156 | 969844 | 11580 | 9359 | 2221 | 26652 |

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का उपक्रम) जोकि एक तकनीकी वित्तीय कम्पनी द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना–क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी के तहत् शुरू में ईडब्ल्यूएस व एलआईजी श्रेणी के आवास ऋण लेने वालों के लिए सब्सिडी योजना जून 2015 में चालू की गई एवं जनवरी 2017 से एमआईजी श्रेणी के आवास ऋण धारकों को भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

उक्त योजना के सुचारू रूप से संचालन हेतु समय–समय पर वर्कशाप भी आयोजित की जा रही है एवं हाल ही में भारत सरकार द्वारा उक्त योजना हेतु नवीन पोर्टल प्रधानमंत्री आवास योजना–सीएलएसएस–क्लेप जारी किया गया है, जिससे इस कार्य को और सुचारू एवं सरलता से किए जाने की सम्भावना है।

आवासी क्षेत्र में वित्तीय सेवाएं देने वाली कम्पनी हडको, जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा भारत सरकार की महत्वाकांक्षी प्रधानमंत्री आवास योजना–सीएलएसएस के तहत आर्थिक रूप से कमजोर, निम्न आय समूह और मध्यम आय क्षेणी के लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास योजना से जुडी क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना के तहत् निम्नानुसार सब्सिडी अवमुक्त की गईः–

| वित्त वर्ष | ईडब्ल्यूएस/एलआईजी | | एमआईजी–I–II | | कुल योग | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2016–17 | 131 | 101.78 | 0 | 0.00 | 131 | 101.78 |
| 2017–18 | 241 | 276.97 | 12 | 22.30 | 253 | 299.28 |
| 2018–19 | 635 | 972.87 | 38 | 69.29 | 673 | 1042.16 |
| 2019–20 | 130 | 269.44 | 28 | 52.67 | 158 | 322.10 |
| 2020–21 | **280** | **642.58** | **192** | **373.62** | **472** | **1016.21** |
| **कुल योग** | **1417** | **2263.64** | **270** | **517.88** | **1687** | **2781.53** |

नन्दकिशोर
उप प्रबन्धक–वित्त

# नई आवास निर्माण तकनीक

**पश्चिम** राजस्थान अपनी स्थापत्य कला के लिए जाना जाता है। यहाँ के पर्यावरण के अनुसार स्थानीय सामग्री के उपयोग से बनाए गए निर्माण कार्यो को अमीरों की हवेलियों और गरीबों के परम्परागत मकानों में भी देखा जा सकता है।

गरीब समुदाय अपने परम्परागत मकान मिट्‌टी, लकड़ी एवं घास–फूस से बनाता है। पारम्परिक झौंपा सुंदर, टिकाऊ एवं पर्यावरण को संतुलित रखते हुए मकान बनाने का एक बढ़िया उदाहरण है। पिछले कुछ समय से पारम्परिक निर्माण सामग्री के बजाए लोहे, एस्बेस्टॉस एवं सीमेंट की चद्दरें तथा खान से निकाले पत्थरों का उपयोग बढ़ा है, जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है साथ ही इस सामग्री से बने मकान पश्चिम राजस्थान के वातावरण के विपरीत होते हैं।

सरकार की विभिन्न आवास निर्माण योजनाओं में स्थानीय तकनीक एवं सामग्री के उपयोग को प्रोत्साहन नहीं दिया गया है, इसलिए सीमेंट, कंक्रीट एवं अन्य ज्यादा ऊर्जा खर्च होने वाली सामग्री का उपयोग बढ़ता जा रहा है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि समुदाय के पास आवास निर्माण की जो सामग्री और तकनीक उपलब्ध है, उसके विकास के लिए कोई शोध कार्य नहीं हुए हैं। इस कारण पारम्परिक सामग्री व तकनीक में जो कमियां हैं, उन्हें दूर नहीं किया जा सका है। शोध के अभाव में कुछ पारम्परिक सामग्री की कीमत अभी भी इतनी ज्यादा है कि गरीब उसे खरीद नहीं पाता। इसके बावजूद आज भी गाँव के कुछ लोग पारम्परिक सामग्री एवं तकनीक को अपना रहे हैं।

ऐसी स्थितियों में अध्ययन करके समुदाय के सामने नई वैकल्पिक आवास निर्माण तकनीक तथा सामग्री रखने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को समझते हुए दो तकनीकों **मिट्‌टी सीमेंट से बनने वाली ईंटें एवं फेरो सीमेंट की छतें** को एक विकल्प के तौर पर समुदाय के सामने रखने का प्रयास किया गया है। ये नई तकनीकें स्थानीय पर्यावरण की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए बनाई गई हैं। ये तकनीकें सुंदर, टिकाऊ एवं रोजगार को बढ़ावा देने की विशेषताएं भी रखती हैं। इन नए तरीकों के बारे में जानकारी बढ़ाने हेतु ग्रामीणों, पंचायत प्रतिनिधियों, कारीगरों तथा अन्य संबंधितों के लिए यह लेख तैयार किया गया है।

## मिट्टी–सीमेंट की ईंटें बनाने की प्रक्रिया

# ईंट बनाने का तरीका

**मशीन सेटिंग**–ईंट बनाने का काम चालू करने से पहले मशीन को एक जगह लगा देना चाहिए, अगर काम स्थाई रूप से करना हो तो फाउन्डेशन तैयार कर लेना चाहिए। नट और बोल्ट से मशीन अच्छी तरह से फिट करनी चाहिए या फिर रेत की बोरियों का प्रयोग करके मशीन को स्थाई कर दें।

**तैयार सामग्री का वजन लेना**–मिट्टी का मसाला तगारे (स्कोप) में लेकर उसका वजन करें।

**सावधानी**–ध्यान रहे कि बड़ी ईंट के लिए वजन 8 किलो 800 ग्राम और छोटी ईंट के लिए 5 किलो मसाला लें।

**मसालें को फर्मों में डालना**–तगारे में तैयार तोला हुआ मसाला फर्में में डालें। मसाला डालने के बाद मसाले को हाथ से दबाएं ताकि ढक्कन ठीक से लग पाए।

**दबाव से ईंट बनाना**– अब मशीन का ढक्कन बंद करें और टोगल लीवर का लॉक खोलने के बाद ऊपर से टेक लगाकर रखें। ठीक से दबाव बनाने के लिए दो व्यक्तियों द्वारा हत्थे को नीचे की तरफ खींचें।

**ईंट को बाहर निकाल कर फर्मा से अलग करना**–हत्थे को नीचे करके मिट्टी की ईंट बाहर निकालें।

## ईंट को सजाकर तरीके से रखना

ईंटों को प्राथमिकता से समतल ज़मीन और छायादार स्थान पर रखा जाए ताकि कम पानी से आसानी से तराई हो सकें। ईंटो को रखने की जगह मशीन के नज़दीक हो। इनको एक दूसरे से ऊपर पाँच की परत में रखा जाएं। ईंटों के बीच थोड़ी सी जगह रखें ताकि चारों तरफ से हवा व पानी मिल सकें और तराई भी अच्छी तरह से की जा सके। तैयार की गई ईंट के सूखने के बाद तराई शुरू करें। (24 घंटे के बाद) तराई लगातार 21 दिन तक करने की आवश्यकता होती है।

## ईंटों की साईज

1. 4 ईंच x 4 ईंच एवं वजन 5 किलो
2. 4 ईंच x 7 ईंच x 9 ईंच एवं वजन 8 किलो 800 ग्राम होता है।

## मशीन पर कार्य करने वाले लोगों की संख्या

ईंट बनाने में आठ लोगों की आवश्यकता होती है। मिट्टी छानना–एक, मसाला तैयार करना–एक, तौल करना–एक, मशीन को ऑपरेट करना–एक, मशीन का हत्था खींचना–दो, ईंट को उठाकर रखना–एक, ईंटों पर पानी डालना–एक।

## मशीन का रख–रखाव

- हर रोज काम शुरू करने से पहले व समाप्ति के बाद मशीन को साफ करें एवं मशीन चलाते समय पिनों व बुश में ऑयल दें और आवश्यकता के अनुसार पिन व बुश बदलते रहें।
- उचित मात्रा में मसाला डालकर दबाव दें।
- मशीन के नट बोल्ट प्रतिदिन चैक करें। ध्यान रखें कि ढ़ीले न हुए हों।
- प्लान्जर की सेटिंग को चैक करते रहें।
- ईंट की मोटाई 10 से.मी. होनी चाहिए। अगर ज्यादा हो तो 3 एम़ एम़ की लोहे की प्लेट साँचें में डाल दें।

## सही मिट्टी को पहचानना

मिट्टी की ईंट बनाने के लिए सबसे पहले पीली मिट्टी की जरूरत होती है। वैसे तो मिट्टी हर जगह मिलती है फिर भी कुछ विशेष गुणों वाली मिट्टी की ही जरूरत होती है। अपने गाँव अथवा स्थानीय स्थल से तीन–चार जगह की मिट्टी को ढूंढ़ कर इकट्ठी करें।

## जाँचने का तरीका

1. छूने पर मिट्टी अत्यधिक कठोर ना हो, मसलने पर पाउडर की तरह छोटे–छोटे कणों में बँट जाए व गीली करने पर चिपचिपी हो।
2. ईंट बनाने के लिए जो मिट्टी लाई जाती है उसे एक विशेष प्रकार की छननी द्वारा प्रयोगशाला में टेस्ट करना चाहिए, जाँच करने के लिए आधा किलो मिट्टी लें, उस मिट्टी को विशेष प्रकार की छन्नी (75 माईक्रोन) में डालकर पानी से धोएं, पानी से तब तक धोएं जब तक पानी साफ ना निकलने लगे। इसके बाद इस मिट्टी को सुखा दें और सूखने पर मिट्टी को पुनः तौल लें। इसका तोल करीबन 350 ग्राम आए तो मानें कि मिट्टी उपयोगी है।
3. मिट्टी के अंदर नमक की मात्रा कितनी है, उसकी जाँच भी प्रयोगशाला में कर लें।

**सुधीर कुमार भटनागर**
**क्षेत्रीय प्रमुख**

# " स्थानीय सरकारों की विकास में भूमिका व चुनौतियाँ "

**पंचायती** राज संस्थान और शहरी स्थानीय सरकारें, स्थानीय सरकार की इकाईयों के रूप में भारत में लंबे समय से अस्तित्व में हैं। हालांकि उन्हे 73वें और 74वें संशोधन अधिनियम के माध्यम से भारत के संघीय लोकतंत्र के तीसरे स्तर के रूप में संवैधानिक दर्जा दिया गया था। त्रिस्तरीय सरकार की स्थापना के प्राथमिक उद्वेश्य लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को बढ़ाना है। सरकार के तीसरे स्तर की शहरी व ग्रामीण विकास में अहम् भूमिका है तथा साथ ही उन्हें शक्ति और संसाधन की कमी के चलते चुनौतियों का सामना भी करना पडता है।

स्थानीय स्वशासन की आवश्यकता : स्थानीय सरकारों द्वारा स्थानीय स्वशासन के माध्यम से समाज के अंतिम व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित होती है, जिससे सुदूर ग्रामीण प्रदेशों के नागरिक भी लोक तंत्रात्मक संगठनों में रूचि लेते हैं। स्थानीय लोगों को उस स्थान विशेष की परिस्थितियों, समस्याओं एवं चुनौतियों की बेहतर जानकारी होती है, अतः निर्णय में विसंगतियों की सम्भावना न्यूनतम होती है। स्थानीय स्वशासन के माध्यम से केंद्र एवं राज्य सरकारों के मध्य स्थानीय समस्याओं को विभाजित कर उनका समाधान अधिक प्रभावी तरीके से किया जा सकता है। यह स्वस्थ राजनीति की प्रथम पाठशाला साबित हो सकती है, जहाँ से जमीनी स्तर पर समाज के प्रत्येक पहलू की समझ रखने वाले एवं स्थानीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील नेता भविष्य के लिए तैयार हो सकते हैं। यह जमीनी स्तर पर लोगो में नियोजन और संसाधनों के बेहतर प्रबंधन की भावना पैदा करने में मदद करता है। स्थानीय शासन से भारत की विविधता को और अधिक सम्मान मिलता है।

स्थानीय सरकारों की समस्याएं : भारत में स्थानीय सरकार द्वारा विभिन्न समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। स्थानीय सरकारों को दिया गया धन उनकी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं होता। कई बार राज्यों द्वारा स्थानीय निकायों के कामकाज के प्रति रूचि की कमी के कारण उन्हें समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कर्मचारियों की कमी और बुनियादी ढ़ाचें की कमी जैसे मुद्दे सदैव ही स्थानीय निकायों के कामकाज में बाधा डालते हैं। पंचायतो और नगरपालिकाओं की वित्तीय शक्तियों का कुशलतापूर्वक उपयोग अब तक सम्भव नहीं हो पाया है। बहुत कम ग्राम पंचायतें एवं स्थानीय निकाएं बाजार, मेलों, सम्पत्ति और व्यापार आदि पर कर लगाती है।

स्थानीय सरकारों की कार्य प्रणाली में सुधार : पर्याप्त मानव पूंजी के माध्यम से स्थानीय सरकारों के संरचनात्मक ढ़ाचें को मजबूत करने की आवश्यकता है। पंचायतों व स्थानीय निकायों के कामकाज की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए कुशल कर्मचारियों की भर्ती और नियुक्ति की दिशा में गंभीर प्रयास किये जाने चाहिए। केंद्र व राज्य सरकारों की तरह स्थानीय सरकारों के लिए भी बजट का प्रावधान होना चाहिए जिससे वे अपने राजस्व और व्यय को प्रबंधित कर सके एवं उनकी कार्य प्रणाली और अधिक संगठित हो सके। स्थानीय  सरकारों में भाग लेने वाले लोगो को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और उन्हें जनहित की सेवा हेतु अभिप्रेरित किया जाना चाहिए। इनके कार्यों का सामाजिक आंकलन भी किया जाना चाहिए जिससे उनका उत्तरदायित्व सुनिश्चित हो सकें।

स्थानीय स्वशासन के माध्यम से अपनी कुशलताओं व शक्तियों के सही आंकलन से स्थानीय सरकारों द्वारा स्थानीय स्तर पर कई सामाजिक, आर्थिक, आधारभूत आदि विकास कार्यों को गति दी जा सकती है।

गरिमा स्वामी
उप प्रबंधक–परि0

# ओवरसीज प्रोफेशनल्स का जयपुर दौरा

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार एवं मानव बसाव एवं प्रबंध संस्थान (एच.एस.एम.आई.) नई दिल्ली द्वारा ओवरसीज प्रोफेशनल्स के प्रशिक्षण हेतु दिनांक 4 फरवरी से 7 फरवरी 2020 तक “Planning & Management of Sustainable Cities” के संबंध में जयपुर का दौरा किया गया। प्रशिक्षण के तहत प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न योजनाओं के अध्ययन के क्रम में जयपुर स्थित आवासीय एवं इंफ्रास्ट्रक्चर विकास कार्यों तथा ऐतिहासिक पुरातत्व स्थलों, स्मारकों का अध्ययन किया गया।

## बर्ड पार्क एवं वाटर म्यूजियम

## द्रव्यवती रिवर फ्रंट परियोजना (प्रोजेक्ट एक्सपीरिएंस सेंटर, शिप्रा पथ

## सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट, सांगानेर

## जयपुर मैट्रो रेल

## स्मार्ट सिटी जयपुर परियोजना

## ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल के जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का दौरा

आशीष कुमार
सहायक प्रबन्धक

# '' हिन्दी से जुडे कुछ रोचक तथ्य''

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार, जिसकी कोई राष्ट्रभाषा नहीं, उसका कोई राष्ट्र भी नहीं है। इस प्रकार से राष्ट्र का अस्तित्व ही राष्ट्रभाषा से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा होता है। महात्मा गांधी के अनुसार कोई भी देश सच्चे अर्थ में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।

किसी भी स्वाधीन देश की सही अभिव्यक्ति उसकी अपनी भाषा में ही हो सकती है। किसी भी देश की राष्ट्रभाषा ही राजभाषा भी होती है। हिंदी के माध्यम से भारत की स्वाधीनता का महासमर लड़ा गया इसलिए स्वाधीन भारत में हिंदी ही राजभाषा की पूर्ण अधिकारिणी बनी।

**ऊपर लिखे दोनों पैरा में हमारी राष्ट्रभाषा/ राजभाषा के बारे में महापुरूषों की राय वर्णित की गई है। पर अब प्रश्न ये उठता है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, या राजभाषा या फिर दोनों। इसे जानने के लिए चलिए पहले ये जाने की राष्ट्रभाषा और राजभाषा की परिभाषा क्या है:–**

**राजभाषा** का सीधा–सादा अर्थ है–राजकाज अर्थात् शासन–प्रशासन अथवा सरकारी कामकाज की भाषा। संविधान सभा की स्वीकृति से 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी राजभाषा बनी। इस प्रकार से राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है, जिसकी परिभाषा इस प्रकार से दी जा सकती है–सामान्य शासन–प्रशासन, न्याय–प्रक्रिया, संसद–विधान मंडल एवं सरकारी कार्यालयों में प्रयोग हेतु संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा एवं लिपि तथा भारतीय अंकों का रूप ही राजभाषा है।

राजभाषा के ही समांतर राष्ट्रभाषा शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। राजभाषा के स्वरूप को अच्छी तरह समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि राष्ट्रभाषा क्या है?

**राष्ट्रभाषा** का अर्थ–एक राष्ट्र में समस्त राष्ट्रीय तत्वों को व्यक्त करने वाली भाषा जो राष्ट्र में भावनात्मक एकता कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हो राष्ट्रभाषा है। भारत एक ऐसा बहुभाषा–भाषी राष्ट्र है, जहाँ समृद्ध संस्कृति की विशाल परंपरा है, जो यहाँ की विभिन्न भाषाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। इस प्रकार से इस राष्ट्र में अनेक भाषाएं व्यवहृत होती हैं। इनमें से प्रमुख 22 भाषाओं को राष्ट्रीय स्वीकृति मिली है तथा उन्हें संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इनमें हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है, जो लिखने, पढ़ने में अपेक्षाकृत सहज है तथा सभी भाषाओं के बीच संपर्क–सूत्र का काम करती है। प्रत्येक भारतवासी इसे समझता और थोड़े–बहुत परिवर्तनों के साथ बोलता है। इस प्रकार से हिंदी का प्रयोग अखिल भारतीय स्तर पर सर्व स्वीकृत माध्यम के रूप में हो रहा है। हिंदी का यह राष्ट्रभाषा रूप है। राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग संविधान के अनुसार नियम बनाकर हो रहा है, इसलिए सैद्धांतिक स्तर पर राजभाषा और राष्ट्रभाषा एक ही चीज नहीं है, उनमें पर्याप्त अंतर है ।

**वर्तमान समय में हिंदी राष्ट्र्भाषा के साथ–साथ संध तथा 11 राज्यों की राजभाषा है**

## राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर –

1 राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है, जबकि राष्ट्रभाषा स्वाभाविक रूप से सृजित शब्द। इस प्रकार राजभाषा प्रशासन की भाषा है तथा राष्ट्रभाषा जनता की भाषा।

2 समस्त राष्ट्रीय तत्वों की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा में होती है, जबकि केवल प्रशासनिक अभिव्यक्ति राजभाषा में होती है।

3 राजभाषा की शब्दावली सीमित है, जबकि राष्ट्रभाषा की शब्दावली विस्तृत।

4 राजभाषा, नियमों से बंधी होती है, जबकि राष्ट्रभाषा स्वतंत्र या मुक्त प्रकृति की होती है।

5 राजभाषा में शब्दों का प्रवेश, निर्माण अथवा अनुकूलन (विशेकर तकनीकी प्रकृति के शब्दों का) विद्वानों एवं विशेषज्ञों की समिति की राय से किया जाता है, जबकि राष्ट्रभाषा में शब्द समाज से आते हैं तथा प्रचलन के आधार पर रूढ़ होकर मान्यता प्राप्त करते हैं इसके निर्माण मे सभी का हाथ होता है।

6 राजभाषा, हिंदी भाषा का प्रयोजन मूलक रूप है इसलिए तकनीकी सृजन है जबकि राष्ट्रभाषा, हिंदी भाषा का स्वाभाविक तथा पारंपरिक रूप है।

7 राजभाषा के प्रयोग का क्षेत्र सीमित होता है, जबकि राष्ट्रभाषा का क्षेत्र इतना व्यापक कि उसका व्यवहार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है।

8 राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर अंग्रेजी की जगह पर हो रहा है जबकि राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग स्वाभाविक स्वरूप से देश–विदेश सर्वत्र हो रहा है।

**अब प्रश्न उठता है, कि भारत एक बहुभाषा–भाषी देश है, तो फिर हिन्दी को ही राजभाषा क्यों चुना गया। इसका उत्तर स्पष्ट करने के लिए निम्न विश्लेषण पर गौर करें:–**

भारत बहुभाषा–भाषी राष्ट्र है। यहां हिंदी सहित कई भाषाओं की समृद्ध परंपरा है। इनमें हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो सभी भाषा–भाषियों के बीच सेतु का काम करती है। इसे बोलना, समझना, लिखना, पढ़ना अपेक्षाकृत आसान है। सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, काका कालेलकर, सुब्रह्ममण्यम् भारती, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, बाल गंगाधर तिलक, सरदार भगत सिंह तथा सी. राजगोपालाचारी सहित बड़े–बड़े दिग्गज जननायकों ने हिंदी को राष्ट्रहित की भाषा माना तथा उसे सर्वव्यापी बनाने में भरपूर योगदान किया । इस प्रकार से हिंदी को राजभाषा नहीं बनाए जाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता था। इसके लिए मोटे तौर पर जो कारण परिलक्षित हैं, वे इस प्रकार से हैं :–

- हिंदी सभी भागों में बोली तथा समझी जाने वाली आम जनता की भाषा है।
- क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग अपने प्रदेश तक ही सीमित है जबकि हिंदी का सरोकार पूरे हिंद (हिन्दुस्तान) से है।
- हिंदी को सभी वर्गों का मुक्त रूप से समर्थन मिला।
- अभिव्यक्ति की क्षमता में हिंदी अत्यंत समृद्ध भाषा है।
- हिंदी की महत्ता इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि इस भाषा में संचित ज्ञान को प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित अध्ययन–अध्यापन देश–विदेश में यूरोप वासियों के द्वारा प्रारंभ हुआ।

- हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में सहयोगी भाषा रही है जबकि अंग्रेजी भाषा ने अन्य भारतीय भाषाओं के विकसित स्वरूप को दबाए रखा।
- हिंदी अपने लेखन और व्याकरणिक संरचना में संस्कृत के सर्वाधिक निकट है। इस तरह इसका विकास भारतीय भाषाओं की परंपरा में हुआ है
- हिंदी की लिपि देवनागरी, वैज्ञानिक दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त लिपि है। इसके अक्षर उदग्र, स्पष्ट और स्वस्थ आकार वाले हैं। संस्कृत के कारण यह लिपि विश्वव्यापी है।
- राष्ट्रीय आंदोलन के माध्यम के रूप में हिंदी का प्रचार–प्रसार कम समय में ही काफी बढ़ गया था। यह स्वाधीनता आंदोलन में संपर्क भाषा थी। भारतीय स्वाधीनता का महासमर हिंदी के माध्यम से ही लड़ा गया।
- हिंदी बोलने वालों की संख्या भारत में सर्वाधिक है। लोकतंत्र में शासक और शासित की भाषा एक ही होनी चाहिए।
- भारतीय भाषा के पत्र–पत्रिकाओं का हिंदी संस्करण जनता में काफी लोकप्रिय रहा था। हिंदी बंगवासी, भारत मित्र, उदंत मार्तण्ड, सुधा वर्षण, उचित वक्ता, देवनागरी, सरस्वती, हितवार्ता, विशाल भारत, वेंकटेश्वर एवं आज आदि समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया था।
- अन्य भाषाओं का प्रचार–प्रसार हिंदी में अनुवाद के कारण ही बढ़ रहा था। इसके अतिरिक्त भी अनेक कारण थे जिसके आधार पर हिंदी को ही राजभाषा बनने का अधिकार था, इसलिए हिंदी को ही राजभाषा बनाया गया।

**विश्व हिंदी सम्मेलन का प्रारम्भ एवं प्रयोजन**

हिंदी भाषा के विश्वव्यापी प्रसार और विश्व के विभिन्न देशों में हो रहे हिंदी संबंधी कार्यों के संज्ञान और समन्वय के लिए विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जाता है। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर (भारत) में आयोजित किया गया था।

उसके उपलक्ष्य में वर्ष 2006 से भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 10 जनवरी को "विश्व हिंदी दिवस" मनाया जाता है। विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए यह सकारात्मक प्रयास है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में है। अब तक आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलनों का विवरण निम्न प्रकार हैः–

- नागपुर (भारत) सन् 1975
- पोर्ट लुई (मॉरीशस) सन् 1976
- नई दिल्ली (भारत) सन् 1983
- पोर्ट लुई (मॉरीशस) सन् 1993
- पोर्ट ऑफ स्पेन (ट्रीनीडाड टुबैगो) सन् 1996
- लंदन (इंग्लैण्ड) सन् 1999
- पारामारिबो (सूरीनाम) सन् 2003
- न्यूयार्क (अमरीका) सन् 2007

**क्या आप जानते है कि मूलतः हिंदी किस क्षेत्र की भाषा है? हिंदी' शब्द किस भाषा का है ? हिंदी में किसी व्यक्ति के नाम का संक्षिप्ताक्षर लिखने की विधि क्या है ? आइये इन प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयत्न करेंः–**

**आज जिसे हम हिंदी कहते हैं, वह खड़ी बोली पर आधारित है जो मूलतः मेरठ, सहारनपुर, बिजनौर और पूर्वी दिल्ली की भाषा है।** व्यापक अर्थ में हिंदी कुल 20 बोलियों, भाषाओं का समुच्चय है जिसमें पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, बिहारी, राजस्थानी और पहाड़ी बोलियां शामिल हैं। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार 48 से अधिक बोलियों और भाषाओं को हिंदी के

अंतर्गत माना गया है। सन् 1961 की जनगणना के अनुसार हिंदी के 97 भाषा रूप हैं। हिंदी प्रदेश की सीमाएं पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर–पश्चिम में अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी छोर तक के पहाड़ी प्रदेश, पूर्व में भागलपुर, दक्षिण में रायपुर तथा दक्षिण–पश्चिम में खंडवा तक विस्तीर्ण हैं।

**हिंदी' शब्द फारसी भाषा का है**। इसी प्रकार 'उर्दू' शब्द तुर्की भाषा का और 'अंग्रेजी' शब्द फ्रांसीसी भाषा का है।

**हिंदी में किसी व्यक्ति के नाम का संक्षिप्त रूप लिखने की 3 विधियाँ हैं।** व्यक्ति अपनी सुविधा और रुचि के अनुसार कोई एक विधि चुन सकता है। उदाहरणार्थ, यदि किसी व्यक्ति का नाम राम गोपाल वर्मा है तो वह

1. आर.जी वर्मा लिख सकता है या
2. रा.गो. वर्मा लिख सकता है या
3. र.ग. वर्मा लिख सकता है।
4. हिंदी की प्रकृति के अनुसार रा.गो. वर्मा उपयुक्त है।

आशा है, कि हमारी राष्ट्रभाषा/ राजभाषा के विषय के उपरोक्त जानकारी दिलचस्प प्रतीत होगी ।

अंजु गर्ग
प्रबन्धक (सचिवीय)

## "पुश्तैनी घर के सपने"

घनी रात में अक्सर
इक तस्वीर (1) दिखती है
कच्ची मिट्टी की लिपी (Muddy Floor) हुई
आड़ी तिरछी लकीरें दिखती है
कहीं कोई ईंट नहीं, कोई कांक्रीट नहीं,
कहीं प्लास्टर नहीं है, कोई बीम नहीं है,
........बहुत कुछ नहीं था
........पर सुकून यहीं था!!!
तस्वीर (2) पलटती है,

एक बड़ा सा "मढ़ा" (Store Room) दिखता है
बेतरतीब मगर खामोश चीज़ों से भरा हुआ,
एक "गुसलखाना" (Bathroom) दिखता है,
एक नमी सी लिए हुए
आँख के पानी से लबालब भरा हुआ
फिर ये सपना सूखा सा क्यों है?
भरा है सब कुछ फिर मन भूखा सा क्यों हैं?

तस्वीर (3) फिर पलटती है,
कमरों की चौहददी ने आँगन घेरा है
उस खुरदरे आँगन पे एक चूल्हे सा है
सुबह–शाम उसका आदर दूल्हे सा है
बिखरे हुए दिनभर के
वहाँ मिलते और खिलखिलाते थे
फिर "तपी"(Hard Baked) रोटियाँ खाते थे,
..... न आँगन, ना चूल्हा, ना है वो रोटियाँ
..... हैं तो बस अब चलती फिरती बोटियाँ
..... चलती फिरती बोटियाँ (Human Bodies)!!

डॉ दीपक कुमार रॉय
प्रबंधक (विधि)

# दिनांक 25.01.2020 को आयोजित खेल दिवस

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 25.01.2020 को खेल दिवस आयोजित किया गया था। कार्यालय कार्मिकों के साथ परिवार के सदस्यों ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ अपनी प्रतिभागिता दी। स्पोर्टस डे पर भिन्न–भिन्न खेल गतिविधियां खेली गई जैसे कि बॉल पॉसिंग (ग्रुप में), लक बाई चांस (ग्रुप में), गुब्बारा दौड़ (कपल के साथ), गुब्बारा फोड़ (बच्चों में), सौ मीटर दौड़ (बच्चों में), तीन टांग की दौड़ (बच्चों व कपल के साथ पृथक–पृथक), नीबू दौड़ प्रतियोगिता (बच्चों, पुरूष तथा महिलाओं हेतु पृथक–पृथक), जलेबी दौड़ (बच्चों, पुरूष तथा महिलाओं

हेतु पृथक–पृथक), महिलाओं के लिए म्यूजिकल चेयर, पुरूषों के लिए लंगड़ी टांग, बेडमिंटन, रिंग बॉल, रस्सी खींच, डिस्क तथा हाउजी आदि आनन्दित कर देने वाला आयोजन रहा जिसमें प्रत्येक सदस्य द्वारा सक्रिय रूप से अपनी–अपनी प्रतिभागिता दी गई। कार्यक्रम के अंत में सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

**आशीष कुमार, सहायक प्रबन्धक**

~~*~~*~~

# " मन के हारे हार है, मन के जीते जीत "

**आज** के इस दौर में जहाँ प्रत्येक मनुष्य प्रतिस्पर्धा की दौड़ में शामिल है एवं उसने जीवन को अनमोल से अल्प मूल्य बना दिया है, उसके लिए मन की शक्ति को समझना अति आवश्यक हो गया है। संस्कृत की एक कहावत है– मन एव मनुष्याणां कारणम बंधमोक्ष्योः अर्थात मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है। इसलिए कहा गया है जिसने मन को जीत लिया उसने जगत को जीत लिया। दुख और सुख तो सभी पर पड़ा करते हैं किन्तु हार और जीत तो केवल मन के मानने अथवा न मानने पर ही निर्भर है अर्थात मन के द्वारा हार स्वीकार किए जाने पर व्यक्ति की हार सुनिश्चित है। जय–पराजय, लाभ–हानि, यश–अपयश और सुख–दुख सब मन के ही कारण है इसीलिए व्यक्ति जैसा अनुभव करेगा वैसा ही वह बनेगा। प्रायः देखा गया है कि जिस कार्य के प्रति व्यक्ति का रूझान अधिक होता है, उस कार्य को वह कष्ट सहन करते हुए भी पूरा करता है। जैसे–जैसे किसी कार्य के प्रति मन की आसक्ति कम हो जाती है, वैसे–वैसे ही उसे संपन्न करने के प्रयत्न भी शिथिल हो जाते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि मन को शक्ति संपन्न कैसे किया जाये तो मन को शक्ति संपन्न बनाने के लिए सबसे पहले उसे अपने वश में रखना अति आवश्यक है। जिसने मन को वश में कर लिया, उसने संसार को वश में कर लिया किन्तु जो व्यक्ति मन को न जीतकर स्वयं उसके वश में हो जाता है, उसने मानो सारे संसार की अधीनता स्वीकार कर ली। मन को शक्ति संपन्न बनाने के लिए हीनता की भावना को दूर करना भी आवश्यक है। जब व्यक्ति सोचता है कि मैं अशक्त हूँ, दीन–हीन हूँ, शक्ति और साधनों से रहित हूँ तो उसका मन कमजोर हो जाता है।

मन तो एक अबोध शिशु सा है जो कि अनंत शक्ति का स्त्रोत है। मन की इसी शक्ति को पहचान कर दुहराया जाना चाहिए–अहमिन्द्रो न पराजिग्ये अर्थात मैं शक्ति का केंद्र हूँ और जीवन पर्यन्त मेरी पराजय नहीं हो सकती है। यदि मन की इस अपरिमित शक्ति को भूलकर हमने उसे दुर्बल बना लिया तो सब कुछ होते हुए भी हम अपने को असंतुष्ट और पराजित ही अनुभव करेंगे और यदि मन को शक्ति संपन्न बनाकर रखेंगे तो जीवन में पराजय और असफलता का अनुभव कभी न होगा। मन की इस शक्ति को निम्न पंक्तियों के माध्यम से वर्णित किया जा सकता है:–

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
मन तो शिशु सा अबोध है, यही है सच्चा मीत।।

मन झूमे, मन गाये, इसकी अपनी अद्‌भुत प्रीत।
मन तो मन में नाच उठे, इसका अपना संगीत।।

ना करो तुम इसे निराश कभी, ना हो यह भयभीत।
संवर गया जीवन उसका, समझ ले जो मन की रीत।।

सदैव रहे परितुष्ट वही, जिसका मन पुनीत।
लड़ जाए हरेक चुनौती से वो, जो रखे मन को अभीत।।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
मन तो शिशु सा अबोध है, यही है सच्चा मीत।।

रेनू चौधरी
उप प्रबन्धक–वित्त

## मेरी बहन...जिसे मैनें खो दिया
## (28 जनवरी 2021)

नज़रे ढूंढ़ेंगी पर देख न सकेंगे
चौखट के आगे कदम बढ़ न सकेंगे
पुकारने वाली वो आवाज
अब कभी न सुन सकेंगे...!

ओ जाने वाले...तूने ठीक नहीं किया
ओ ऊपर वाले... ये ठीक नहीं हुआ!!
बड़ी होके भी बचपना दिखाना
पल में खुश पल में रूठ जाना
कितनी भी हो नाराजगी
पर हमेशा आशीर्वाद दिया.....!

ओ जाने वाले...तूने ठीक नहीं किया
ओ ऊपर वाले... ये ठीक नहीं हुआ!!
तो फिर से एक बार आ जाओ
जी भर के हमको सता जाओ
आह बन गई है सिसकियाँ
साँसें बनी हिचकियाँ

मेरी बहन...तूने ये क्यों किया...!
ओ जाने वाले...तूने ठीक नहीं किया
ओ ऊपर वाले... ये ठीक नहीं हुआ!!

डॉ दीपक कुमार राय
प्रबंधक (विधि)

## सुखी होने के दस रास्ते

काम में सदा व्यस्त रहो
बहुत कम बोलो
कभी–कभी ना बोलना भी सीखो
अपनी गलती स्वीकार करो
व्यवहारिक बनो
पहले लिखो बाद में दो
सबकी राय लेकर निर्णय लो
सबको सम्मान से बुलावो
जरूरत न हो उसकी खरीदी न करो
सोचो फिर बोलो

## दुखी होने के दस रास्ते

देरी से सोना व देरी से उठना
लेन–देन का हिसाब रखना
किसी के लिये कुछ ना कहना
हमेशा स्वयं के लिए ही सोचना
स्वयं की बात को ही सत्य बताना
किसी का विश्वास न करना
बिना कारण झूठ बोलना
कोई भी काम समय से न करना
बिना मांगे सलाह देना
इच्छाओं का अन्त न होना

अनिल कुमार खण्डेलवाल
प्रबंधक–वित्त

# खुद के साथ भी बैठिए (स्वयंबोध)

भावों के परिवर्तित होते ही स्रावों में परिवर्तन होता है तब स्वतः ही शारीरिक व मानसिक परिवर्तन भी दिखाई देने लगते है। बार–बार किया गया चिंतन (अनुचिंतन) आत्म निर्देश का रूप धारण कर लेता है। चाहे चिंतन भला हो या बुरा उसी अनुरूप मन और शरीर में परिवर्तन कर देता है। ध्यान और आत्म निर्देश द्वारा अपने चारों ओर सकारात्मक पर्यावरण का क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है। बात अभ्यास की है। दृढ़ विश्वास और संकल्प का मनोबल रूपांतरण कर देता है। किसी भी रोग अथवा बीमारी के प्रति बार–बार चिंतन करने से व्यक्ति को रोग विशेष जरूर हो जाता है तो क्यों नहीं स्फूर्त, निरोग और सकारात्मक बने रहने का चिंतन किया जाएं। इस चिंतन को बनाए रखने में मौन तथा ध्यानाभ्यास को आत्मसात कर लेना बहुत मंगलकारी है।

अपनी भावनाओं का प्रसार स्पर्श द्वारा और मानसिक प्रवाह द्वारा शरीर को दें। कुछ दिन करके देखिए कैसी कांति झलक उठेगी। शरीर और मन निरोग होगा। उसी अनुरूप विचारों के परमाणु एकत्र होने लगते है और अणु बदलने लगते हैं। मानसिक अनुशासन रखने के अभ्यासी बनें। ध्यान के साथ मौन रहना सीखिए अनावश्यक ऊर्जा खर्च न करें। जब व्यक्ति चुप रहता है तो उसकी स्वयं से बात हो जाती है। आत्मिक उन्नति और बौद्धिक शक्ति प्राप्ति के लिए ध्यान का प्रयोग करने से चूके नहीं।

खुद के साथ बैठना अपने आप में एक बहुत बड़ी साधना है। प्रत्येक दिन कुछ समय अपने साथ व्यतीत करें। मौन और प्रार्थना दोनों से भाग्य तक बदला जा सकता है फिर स्वास्थ्य क्या चीज है। कुछ घंटों का मौन और ध्यान भी बहुत लाभकारी हो सकता है। कर्म होते रहें और अभ्यास होते रहें तो कुछ भी कठिन नहीं। ऊर्जा के व्यर्थ बहने से बचाव होता है। स्वयं के साथ रहने से बिगड़ते काम तथा व्यवहार सुधर जाते हैं, संवेदनशीलता बढ़ती है, दृष्टि, सोच व भावनाओं में बदलाव हो जाता है अर्थात् ध्यान कई विपदाओं से बचा लेता है। मौन रहकर ही पूर्व में किए गए कार्यों पर विचार किया जाना चाहिए। अच्छा है स्वयं के साथ रहना और ध्यान का अभ्यास करना सीखा जाए। जीते है, सोते, जागते व चलते–चलते भी चिंता में डूबे है इसलिए निराशावादी अधिक रहते है। ध्यान वर्तमान का दृष्टाभाव कराता है जिससे सकारात्मक प्रवृत्ति बढ़ती है। चंचलता के कारण दिन में अनेक बार झूठ बोले जा सकते हैं जोकि नकारात्मक ऊर्जा का उत्पादक है। स्वयं के साथ रहने से असीम शांति, प्रेम और आनन्द हासिल किया जा सकता है और अनेक दुर्गुणों, दुष्प्रभावों, समस्याओं और दुःखों से बचा जा सकता है।

बच्चों को भी चुप रहने और बोलने के समय का अंतर पहचानना आना चाहिए। शांत–चित्त, मौन व ध्यान के प्रभाव में रहकर कभी स्वयं की जाँच करें तो आसानी से स्वयं ही स्वयं की कमियां देख पाएंगे। किसी सलाहकार के पास महंगी सलाह के लिए जाने की जरूरत भी नहीं रहेगी। कई बातों में सुधार की गुंजाईशें खुद–ब–खुद बढ़ जाती है क्योंकि स्वयं का मूल्य जिस दिन पहचान लिया उसी दिन से अपना मूल्य समझ आने लगता है।

कुदरत के इशारों को समझें व उनका पालन करें। सूरज कभी यह नहीं जताता कि मैं ऊर्जा व रोशनी सारे संसार को देता हूँ। चाँद–सितारें अपनी चमक के लिए कभी नहीं इठलाते। जमीन कभी नहीं कहती कि मैं संसार का पोषण करती हूँ और जीवन दायिनी नदियां भी यह नहीं बोलती कि सबको मैनें जीवन दिया। प्रकृति कभी नहीं जतलाती कि मैं ही पालनकर्ता हूँ। सब चुप है और चुप रह कर अपना–अपना कार्य शांति से संतुलित रूप से कर रहे हैं तो हम क्यों दूर रहें?

प्रातः तथा सायंकालिक ध्यान से शरीर व मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। प्रकृति के सामीप्य में विचरण करते हुए वैचारिक मौन पर विराम लगाकर ध्यानाभ्यास करें। ध्यान का अभ्यास मन की शक्ति व सामर्थ्य बढ़ाकर सकारात्मक ऊर्जा में अभिवृद्धि करता है। स्वास्थ्य सुधार व याददाश्त में वृद्धि के साथ स्वयं के प्रति एकाग्रता, जागरूक व सचेत करती है। ध्यान अवस्था जिससे शारीरिक व मानसिक गतिविधियां नियंत्रित रहती है। सदैव योग में भी किसी भी क्रिया को करते समय स्वयं बोध तथा ध्यान को अधिक महत्त्व दिया गया है। जब हम भीतर से खाली होंगे तभी प्रकृति की ताकत भीतर समाहित हो सकेगी।

दिन में स्वयं का आँकलन एक बार जरूर करें कि आज कितनी अर्नगल बातों पर बार–बार विचार किया, दोहराया गया, व्यर्थ बहस, क्रिया–प्रतिक्रिया की गई और इन सबका परिणाम क्या हुआ? सोचें और देखें। सब कुछ स्पष्ट होता चला जाएगा कि कितनी ऊर्जा कमाई और कितनी ऊर्जा समाप्त की सबका विश्लेषण एक बार जरूर करें।

प्रश्न उठता है कि ध्यान का अभ्यास कैसे करें? सबसे सरल बात है कि चुप रहने का अभ्यास प्रारम्भ कर दें। अपनी श्वास को ही सुनने की आदत सर्वप्रथम डाल लें। साक्षी व समभाव रहकर कार्यविधि करें। सोचें नहीं और कहे नहीं। मन में चुप्पी का अभ्यास करते रहने से शरीर, चेहरे व आँखों से मौन झलकने लगता है। ज्ञानेन्द्रियों में स्थिरता आती है। अन्तःकरण शुद्ध होता है। काम, मोह, लोभ, भय, क्रोध, चिंता, आतुरता व व्यग्रता नहीं पनप पाती। सकारात्मक सोच के साथ जागरूकता का विकास होता है। मानसिक तथा वाचक मौन से सुखद निद्रावस्था प्राप्त होकर रोग प्रतिरोधक क्षमता में प्रकृतिशः वृद्धि होती है।

बोलने से हम संसार से जुड़ते है और ध्यान से खुद से जुड़ते है। आज ज्यादा से ज्यादा

बोलने व विचारों से बातें करने का अभ्यास अधिक रह गया है। चुप रहना, कम बोलना या मौन रहना भूल से गए है। असंतुलित व असंयमित जीवन शैली में हम खुद की अवहेलना बड़ी आसानी से कर रहे है और याद आती भी है तो तब आती है जब शरीर की जीवनी शक्ति का ह्रास प्रारम्भ होने लगता है अर्थात् रोगग्रस्त होने लगता है, तब तक बहुत सारी शारीरिक व मानसिक बीमारियों व व्याधियों से घिर चुके होते हैं।

रोज 10 मिनट बिना विचारों व वार्तालाप के स्वयं के साथ बैठिए। संगीत, पुस्तकें, मोबाईल, टीवी को कुछ मिनटों के लिए खुद से दूर रख कर,शारीरिक व मानसिक तौर पर जो चल रहा है उसे देखते चले...रूकना कहीं नहीं... देखते चले...वार्तालाप बिल्कुल न हों। सब चलचित्र की भांति आएंगे और एक–एक करके सब चले जाएंगे। अभ्यास होने पर मौन तथा ध्यान सफल हो जाएगा। सारे विचार धीरे–धीरे खत्म होने लगेंगे। इनके लेन–देन व आवागमन से कोई वास्ता न रखें। विचारों का शांत होना जरूरी है। विचारों की पकड़ को छोड़िए इन्हें पकड़ने की आदत न डालें। अर्नगल विचारों को शून्य करें। प्राणशक्ति का व्यर्थ व्यय रोकिए। मन को स्थिर रखते हुए बुरे विचारों का त्याग करते रहने का अभ्यास चलते रहना चाहिए।

**सुधीर कुमार भटनागर**
**क्षेत्रीय प्रमुख**

## जीवन का सफर

समय चला, पर कैसे चला, पता ही नहीं चला,
जिंदगी की आपाधापी में, कब निकली उम्र हमारी यारों,
पता ही नहीं चला....
कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे, कब कंधे तक आ गए,
पता ही नहीं चला....
किराए के घर से शुरू हुआ था सफर अपना,
कब अपने घर तक आ गए,
पता ही नहीं चला....
साईकिल के पैडल मारते हुए हांफते थे उस वक्त,
कब से हम कारों में घूमने लगे हैं,
पता ही नहीं चला....
कभी थे जिम्मेदारी हम माँ–बाप की,
कब बच्चों के लिए हुए जिम्मेदार हम,
पता ही नहीं चला....
एक दौर था जब दिन में भी बेखबर सो जाते थे,
क्ब रातों की उड़ गई नींद,
पता ही नहीं चला....
जिन काले घने बालों पर इतराते थे कभी हम,
कब सफेद होना शुरू हो गए,
पता ही नहीं चला....
दर–दर भटके थे नौकरी की खातिर,
सब कब बीता और कब रिटायर हो गए,
पता ही नहीं चला.....
बच्चों के लिए कमाने, बचाने में इतने मशगूल हुए हम,
कब बच्चे हमसे हुए दूर,
पता ही नहीं चला....
भरे–पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे हम,
अपने भाई–बहनों पर गुमान था, उन सब का साथ छूट गया,
कब परिवार हम दो पर सिमट गया,
पता ही नहीं चला....
अब सोच रहे थे अपने लिए भी कुछ करें,
पर शरीर ने साथ देना बंद कर दिया,,,,,,,,
पता ही नहीं चला....
जिन्दगी अंतिम मोड़ पर आ गई...यही जीवन की सच्चाई है
और पता ही नहीं चला....

**नंद किशोर**
**उप प्रबन्धक (वित्त)**

# " मूर्ति तक श्रद्धा .......?"

भिन्न–भिन्न महापुरूषों ने भिन्न–भिन्न स्थानों पर उपासना पद्धतियां, मत, सम्प्रदाय, दर्शन और धर्म की स्थापना की....व्याख्या.. की, जिन्हें अलग–अलग नामों से अलंकृत किया गया, किन्तु सबका मूल एक ही रहा है, मानवता और मानव धर्म। जब घट–घट में प्रभु का वास है, तो यह स्वयं एक धर्म हुआ। तब क्यों? अन्य धर्म, रीति–रिवाज, जाति, परम्परा, पूजा–पद्धति और दर्शन भावना की अवहेलना के साथ, हर धर्म से जुड़ी जीवन–मूल्यों की शिक्षा की उपेक्षा का भाव पनप सा रहा है? उसमें अरूचि जताने की आवश्यकता कहाँ रही? जब कि संदेश और संकल्प सबका सार्वभौम एवं सार्वजनिन ही रहा है। दिव्य आत्माओं के गुणों एवं विचारों की शिक्षा के चरणों का संयोजन एवं उसे अंगीकार करने के बजाय, मनगढंत मूर्तियों के चरण छूने एवं श्रद्धा जता लेने भर से क्या पापों से मुक्ति पाई जा सकेगी? और तो और झूठ को पालने एवं सत्य को अस्वीकार करने की मनोवृत्ति के साथ, राग–द्वेष, विषय–कषाय युक्त वृत्तियों के पनपते रसायन एवं भावनाओं को लादकर, स्वयं को धोखे में रखकर खुद के धर्म के नाम पर, सुख–शांति के लिए पुण्य करने के लिए निकल पड़ना कैसी श्रद्धा है?

कौन से मंदिर में किस भगवान के दर्शन किए जाए या कौन से भगवान को पूजा जाए? पूजा का अधिकार किसे...? कब....? किन–किन को? यह स्वयं व्यक्तिशः ही तय है, दूसरों के मंदिर हम क्यों जाएं...? लो यहॉ भी अहम् आ गया.... कि, हम तो हमारे मंदिर में ही, दैनिक क्रम में प्रतिमा–दर्शन करेंगे और हमारी ही यात्राऍ करेंगे, किन्तु पूरी जिन्दगी, ईश्वरीय आत्मस्वरूप साक्षात्, स्वयं के मुस्कुराते हुए चेहरे के प्रातः–दर्शन भलें ही नहीं करेंगे, पूरा दिन अच्छे कार्यों एवं शुभ भावनाओं के साथ बिताने हेतु उर्जा का संचय कभी नहीं करेंगे, वैचारिक मलिनता त्यागकर निर्मल एवं मैत्रीप्रधान प्रवृत्ति हेतु कृतसंकल्प कदाचित् नहीं होंगे, परन्तु भिन्न जाति–धर्म के लोगों को मंदिर में घुसने की मनाही जरूर करेंगे, दूसरों को भी बेझिझक सख्ती से राय देंगे कि तुम्हें भी अपने ही मंदिर में दर्शन के लिए जाना चाहिए, अन्य कहीं नहीं। दूसरे मंदिर या प्रतिमा के सामने सर नहीं झुकाने की कसम एंव अन्य को तुच्छ सा समझ बैठने की प्रवृत्ति एवं भावना क्या जल्दी ईश्वर का आशीर्वाद दिलवा देगी? धर्म को धर्म से बांध रखने एवं दूसरे से विमुखता का क्या औचित्य है? जब पूरी तरह यह ही नहीं मालूम की धर्म का अर्थ और उसका सार क्या है? स्वार्थ–सिद्धी हेतु सौद्धेश्य मूर्ति–दर्शन, दर्शन–यात्रा या तीर्थ–यात्राओं के लिए श्रद्धा के साथ निकल पड़ना....! स्वयं के लिए कौनसा पुण्य प्राप्ति कर रहे है? जब कि स्वयं की रूचिकर एवं निष्ठास्वरूप यात्रा के आरंभ से अंत तक पूरी यात्रा के दौरान अपनी श्रद्धा के निशान व नजारें कुछ इस प्रकार अनैतिक एवं अंवाछित रूप से छोड़े जा रहे है.........तब खुद से ही पूछ बैठिए..... कहाँ गई श्रद्धा की शिक्षा....?

रेल व बस में जगह के लिए लड़ना–झगड़ना, शालीनता के स्थान पर अपशब्दों का इस्तेमाल, कमजोर पर हावी होने की कोशिश, क्रोध और मद में सामान इधर–उधर फैंक देना और

मारपीट तक कर लेने की प्रवृत्ति में कहाँ की भक्ति दिखती है? श्रद्धा व धर्म के नेक कार्य के लिए निकले है तो यहाँ शान्ति के स्थान पर उग्रता और संयम के स्थान पर असहिष्णुता कहाँ से आ गई। गुरू एवं ईश्वर प्रतीक महापुरूषों ने प्रेम–भावना के ज्ञान का संचार किया था, अंहकार, दुर्भावना व अन्य बुराईयों का नहीं। किस धर्म के साथ... मुँह में राम बगल में छुरी वाली कहावत सिद्ध कर के श्रद्धा का ढ़ोंग रचने निकल पड़ते हैं....?

तांत्रिको व पंडितों के बहकावे में आकर ताउम्र पीडित और शोषित होते रहते है, अमुक दिन दान, प्रसादी और नदी–नालों में स्नान या मूर्ति की परिक्रमा कर लेने से, जाने या अनजाने हुए पापों की मुक्ति कर लेते है। बाहर आकर वहीं पाप......वहीं कर्म...... फिर से शुरू तो क्या फायदा? यात्रा करने निकले हैं कि भव सुधर जाएगा। दो मंदिर पास–पास है फिर एक को प्रेम व स्नेह की धारा से तो दूसरे को घृणा व तुच्छता की दृष्टि से देखने का क्या औचित्य? क्या दूसरे मंदिर के दर्शन कर लेने से भव बिगड़ जाएगा...? कहाँ लिखा है? मात्र स्व–धर्म मंदिर–दर्शन करके धर्म और पुण्य प्राप्त करने की इतिश्री हो जाती है। कहाँ गया धर्म का लक्ष्य? और धर्म का गुण? धर्म यह नहीं कहता कि, अपने ही देश के अपने ही लोगों में ऊँच–नीच की भावना के साथ जीओं, केवल अपने धर्म को ही सार्वभौम मानकर उसी की इज्जत करों, धर्मों और कोमों को गालियां देने की बातें करों, किन्तु संवेदना और भावना में तरक्की की बात मत करों।

भय एवं दुःखों से मुक्ति हेतु धार्मिक यात्राओं का शुभारम्भ कर तो देते हैं, भले ही आर्थिक रूप से कमजोर है पर श्रद्धा से नहीं। यात्राएं व दर्शन जरूरी है, फिर चाहे रास्ते भर खटपट, लड़ाई–झगड़ा, तर्क–वितर्क एवं तनाव का सिलसिला समूची यात्रा में निरन्तर चलता रहे। झूठे विश्वास, स्वभाव, विचार एवं व्यवहार से दर्शन लाभ नहीं पाया जा सकता। प्रत्येक धर्म का संदेश रहा है कि अहम के अभाव और समर्पण के भाव के बिना आत्मिक शांति, उन्नति व चेतना का विकास कदापि संभव नहीं।

पद–यात्रा के दौरान रास्ते भर जोर–जोर से, शोर–शराबा और हो–हल्ला मचाते हुए मंत्रों व नाम जाप का उच्चारण करते जाते है, लगता है सारी श्रद्धा के बीज इन्हीं मे फूट पडे हो!

पर यह क्या...? मुंह में तम्बाकू या गुटखा भी साथ में चले जा रहा है और बार–बार राह में ही जहां मर्जी पीक थूकते जा रहे है ....... जाप करते जा रहे है..., पाउच, छिलके, थैलियां व कचरा इत्यादि बीच रास्ते में ही फैंकते जाते है। पूरे रास्ते, मंदिर एवं धर्मशाला के भवन में गंदगी और उपद्रव फैलाते है। बीच–बीच में खाली समय ताश–पत्तियों, उद्दण्डता व अश्लील वार्तालाप में व्यतीत करते है। असामाजिकता, गंदगी और नशा ... का क्रम रूकता नहीं........ .रूकिए और देखिए..... कहाँ गई धर्म की श्रद्धा?

शौचालयों में निजी एवं सरकारी तौर पर सभी सुविधाएं उपलब्ध होने के बावजूद, इनका प्रयोग ना कर, समूचे रास्ते को मल–मूत्र द्वारा दूषित कर वातावरण को प्रदूषित करते रहने की बुरी आदत सी दिखाई पड़ती है, शौचालयों का प्रयोग कर भी लिया तो इनकी इतनी दयनीय स्थिति कर देते है कि वहॉ पैर रखने के लिए भी सौ बार–सोचना पड़े। अन्य को संक्रमण इत्यादि कितनी ही परेशानियों एवं असुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है, यह सोचने का धर्म–कर्म कतई नहीं करेंगे कि पीछे आने वालों को भी इस सुविधा का समुचित लाभ उठाने की आवश्यकता पड़ सकती है, उन्हें भरपूर असुविधा होगी। मेरा तो हो गया ..... जिसकी जो जाने...। क्या घर पर भी ऐसा ही सोचते और करते है? महिलाएं एवं पुरूष दोनों ही समान रूप से इसके लिए दोषी है। दूसरों के प्रति करूणा हीन, असहिष्णु व दायित्व विहिन बोध के साथ स्व–सिद्धी में नैतिकता एवं सहिष्णुता धूमिल होती दिखाई दे रही है जो किसी धर्म का हिस्सा नहीं हो सकता। ऐसी हरकतें श्रद्धा पर प्रश्नचिन्ह लगा देती है।

दर्शन की कतार में शीघ्र दर्शनों की हडबडाहट भी रहती है, व्यवस्थित एवं शांतिप्रिय आचरण को छोड़, एक दूसरे को गालियों व अपशब्दों की बौछारों का क्रम रूकता नहीं, धक्कमपेल, खींचा–खांची करते है, फिर चाहे कोई चोटिल ही क्यों ना हो जाए? शायद जल्दी मत्था टेकने से इनकी मनोकामनाएं, मनोरथ की शीघ्र इच्छापूर्ति हो जाएगी, यह सोचकर ही मात्र माथा टेकना ही इनका एकमात्र उद्धेश्य रहता होगा। मूर्ति के सामने नैतिकता, धर्म के विचारों का पालन व अच्छा व्यवहार और ईर्ष्या द्वेष इत्यादि से मुक्ति का संकल्प कहीं नहीं है। रिश्वत देकर दर्शन पहले करना है, भ्रष्टाचार फैलाते है। स्वार्थ के चलते अपंग, बुजुर्गों और बच्चों पर भी दया और मदद करते नहीं दिखाई पड़ते। फिर मूर्ति के समक्ष कैसी आस्था और श्रद्धा? श्रद्धा के पन्नों के अवशेष भी कहाँ रहें..?

यात्रा के दौरान सार्वजनिक सम्पत्तियों यथा बसों, रेलों व मंदिरों के भवन की दीवारों को खुरच–खुरच कर बेहुदा अश्लील चित्रकारी, आकृतियां एवं अपशब्दों के साथ खुद के नाम पते लिखकर गंदा कर आते है। धार्मिक स्थलों पर भी छेड़छाड व अश्लील हरकतें करने से बाज नहीं आते। युवा, प्रौढ़, बड़े –बुजुर्ग सच्चाई और सादगी को भूल ऐसी चंचलता और हरकते करें, तो ऐसी क्रियाशीलता इंसान को पतन की ओर ही ले जाती है, साथ ही दूसरों को भावनात्मक एवं मानसिक हानि भी पहुंचाती है। धर्म किस राह से मिलता होगा...? बैठकर श्रद्धा से सोचिए... ..।

समाज में यदि कोई व्यक्ति अन्य धर्म के मंदिर में दर्शनार्थ जाता है या इस संबंधी कुछ भी रूचिगत करवाता है, तो उसे तुच्छ एवं बहिष्कृत नजर से देखा जाना धर्म के कौनसे हिस्से का न्याय है? उनके कार्यक्रमों में हिस्सा नहीं लेना, अपमानित करना और ताने देना किस धर्म का कौनसा पुण्य है? अहंकार और ममकार का आवरण आ जाता है। उनके यहॉ भोजन करने तथा पानी तक पीने से कतराना...किस धर्म का कौनसा अध्याय है?

धार्मिक–स्थलों पर दर्दनाक और विभत्स हादसों की कड़िया रूक नहीं रही। असंयमता के साथ धक्का–मुक्की, भगदड़ जैसी स्थितियां पैदा कर इंसान बनकर इंसानों को रौंद कर चल देना... धर्म है या दहशत है...? क्यों दौड़ रहे है जब तुम्हीं आत्मा हो, तुम्ही ईश्वर हो, तुम्हारी आत्मा ही ईश्वरीय गुणों के स्वरूप है। भीतर से स्वरूप बहुत बिगडा हुआ है, संयम कहीं नहीं है। जरूरत पर पानी भी नहीं पिलायेंगे और रास्ते भर दान करते जाएंगे। ईश्वर के नाम पर यात्रा से आने पर दिखावे के लिए भोज–कार्यक्रम में हजारों रूपये व्यतीत करते है। जिसमें मनो खाद्य–सामग्री बाद में चाहें व्यर्थ फैंकने हेतु चले जाएं, किन्तु गरीबों और जरूरत मंदों को नहीं खिलाएंगे। अछूत सा व्यवहार, कितना मैला है दिल में? श्रृद्धा के लिए जगह ही कहॉं छोड़ी है फिर भी श्रद्धा भक्ति का ढोंग करते है। प्रतिज्ञा सी होती है कि कपड़ों के कोई अडना नहीं चाहिए, वस्त्र मैले हो जाएंगे, दिल से दिमाग तक जो मैला भरा पड़ा है उसका क्या? आदर एवं सौहार्दपूर्व व्यवहार भूल जाते है, किसी दूसरी जाति–धर्म के व्यक्ति के मंदिर में प्रवेश पर नाक–भौं सिकोडने का हक किसने दिया.श्रद्धा ने.... ?सोचिए....!

मंदिर क्यों जाते है? भगवान के डर से या श्रद्धा से? बाहर और भीतर चेहरा बार–बार बदल जाता है। भक्ति भी व्यापार हो गया, शर्तों व मांग के साथ दर्शन और उपासना का व्यवहार आडंबर के सिवा कुछ नहीं लगता। निष्काम भावना से दर्शन व भक्ति नहीं, बल्कि मूर्ति के सामने सौदेबाजी होती है। सभी कुछ न कुछ मांगते दिखाई दे रहे है। चरित्र–निर्माण, आत्मविश्वास व ईश्वर से भावनात्मक जुड़ाव मात्र मंदिर व मूर्ति तक ही सीमित रूप से दृष्टिगोचर होता है, सामान्य व्यवहार में कहीं नहीं। चाणक्य की मातृभक्ति, राम एवं एकलव्य की गुरू भक्ति, श्रवण कुमार की मातृ–पितृ भक्ति और लक्ष्मण की भातृ भक्ति के समकक्ष मूर्ति के समक्ष कहीं प्रण, निष्ठा, संकल्प एवं कर्तव्य भाव नहीं दिखता।

जिन्दगी में हमें जो धारण करना चाहिए वही धर्म है, नैतिक मूल्यों का आचरण ही धर्म है। धर्म मानवीय गुणों के विकास की प्रभावना है। माँ–बाप, भाई–बहिन, पति–पत्नी, परिवार, समाज और देश की जिम्मेदारियां निभाना भी मानवीय धर्म है...ईश्वर के प्रति श्रद्धा है। जातिगत भेदभाव, धर्म–सम्प्रदाय, समुदाय आदि व्यर्थ बातों में पड़कर प्रेम, सद्भावना, श्रद्धा विश्वास और सब्र के साथ मानवता का धर्म पालन करने में स्वयं को हीन समझना कौनसा धर्म है? इन्सानी रूप में इन्सानियत का दिल दुखाने से कौनसा स्वर्ग मिल जाता है? जिसे कभी देखा ही नहीं।

यह कौनसा धर्म है? कि नेकी करने की शिक्षा ग्रहण होती नहीं, दीन–दुखियों की मदद कर सकते नहीं। महापुरूषों एवं दिव्य आत्माओं की

शिक्षा और संदेशों की अवमानना कर उन्हें पैरों तले कुचल रहे है....। कहाँ गई श्रद्धा? मूर्ति चरणों में अर्पण ही करना है तो नेक आचरण हेतु संकल्प अर्पित करना ही सच्ची श्रद्धा है। मंदिर व मूर्ति के सामने मानसिक शांति ढूंढते है, वह मिलती भी है, पर क्षणिक ही, क्यों कि बाहर आकर.... जैसे थे वैसे ही रहें....फिर वही आचरण एवं विचारों का उत्पादन एवं प्रसारण शुरू। मूर्ति के आगे अच्छा जीवन अपनाने का प्रण लेते भी है, पर कुछ ही दिनों या महीनों में ही पुनः पुरानी जीवन–शैली में लौट आते है। श्रद्धा के नाम पर यह पाखण्ड नहीं है तो क्या है?

मंदिर व मूर्तियाँ हमें जीवन का स्वरूप, लक्ष्य एवं उपयोग समझाने का साधन है, कि गुण, कर्म, स्वभाव व संस्कारों की उत्कृष्टता का मनन का अभ्यास चलता रहें। हृदयानुभूति से दुष्प्रवृत्तियों से छूटने तथा सत्प्रवृत्तियों को अपनाने के लिए उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तव्य की सदैव पालना होती रहे। विचारों का सही मूल्यांकन और उसके महत्व की विशेषताओं से रूबरू होने की जरूरत नहीं समझ कर, अज्ञान की अंधेरी गलियों में भटकते तो रहते है..., पर मिलता कुछ नहीं, क्यों कि श्रद्धा जीवन भर श्रद्धाहीन रही है....। कौनसा जीवन जीना है? यह भी हमारी श्रद्धा ही तय कर रही है। क्या मूर्ति तक की श्रद्धा में ही हम जीते है.....?

**अनिल कुमार खण्डेलवाल**
**प्रबंधक–वित्त**

## प्रेरक संदेश

जब हम गलत होते हैं, तो समझौता चाहते हैं। और दूसरे गलत होते है, तो हम न्याय चाहते हैं।।

जब हम किसी को पसन्द करते है, तो उसकी बुराईयां भूल जाते हैं।

और जब किसी को नापसन्द करते है, तो उसकी अच्छाईयां भूल जाते है।।

अनुमान हमारे मन की कल्पना है और अनुभव हमारे जीवन की सीख।।

भूल होना प्रकृति है मान लेना संस्कृति है और सुधार लेना प्रगति है ।।

सबसे कठिन काम है सबको खुश रखना। सबसे आसान काम है सबसे खुश रहना।।

मैं किसी से बेहतर करूं क्या फर्क पडता है । लेकिन मैं किसी का बेहतर करूं, बहुत फर्क पडता है ।।

राजकुमार लावडिया
प्रबन्धक (प्रशासन)

# " कोरोना – बच्चों के मुख से "

कोरोना समय अच्छा–बुरा दोनों तरह का रहा। ऑफ लाईन स्टडी की आदत थी तो ऑन लाईन स्टडी में काफी परेशानी आई। फैमिली के साथ रहे बहुत सारी चीजें बनानी सीखी। घर में रहे और सेफ रहे। बाहर से इन्फेक्ट होने से बार–बार बचने के प्रयास रहे। बहुत एन्जॉय किया। रामायण और महाभारत क्या है कभी पता ही नहीं था, कोरोना काल के लॉक डाउन में समझा और जाना। टेक्नॉलॉजी से दूर रहे और कुकिंग सीखी।

**सुश्री पलक खण्डेलवाल**

कोरोना में बड़ों के साथ धार्मिक प्रवृत्तियों से जुड़ गए। मम्मी–पापा के साथ सुबह–शाम आरती करने की लगन लग गई जो कभी करते ही नहीं थे। 24 घंटे परिवार के साथ रहे तो एक दूसरे के स्वभाव को समझा, घर में ही खेलने–कूदने में समय कब निकल गया पता ही नहीं चला। रोज 10 मिनट सब मिलकर भगवान का नाम लेते थे। जरूरी नहीं बाहर ही ज्ञान का भण्डार हो घर में भी बहुत कुछ है।

**सुश्री प्रियल खण्डेलवाल**

कोरोना में भाईयों से रोज छोटी–छोटी बात पर झगड़ा किया। घर में मम्मी इतने दिन ऑफिस नहीं गई हमारे साथ रही तो बहुत अच्छा लगा। रोज नया–नया खाना बनाकर मम्मी ने खिलाया। मैने और भाईयों ने भी मम्मी के काम में मदद करना सीखा। मम्मी रोज एक कहानी बनाकर सुनाती थी। कोरोना में मेरा पढ़ना कम हो गया लेकिन बाद में ऑन लाईन क्लास होना बहुत अच्छा लगा। सांप–सीढ़ी, लूडो, दीवार पर बॉल से थप्पी वाला खेल खूब खेला।

**सुश्री अनुश्री जैन**

घर में बंद रहने को सभी मजबूर थे। दूर–दूर तक कोई नहीं दिखता था बस शाम को घरों की छतों व बालकॉनी से लोगों का दिखना और उनसे बोलना बहुत खुशी का माहौल देता था। घर पर खुद से ही कम्पीटिशन की तैयारी की क्योंकि खुद ही पढ़ने के लिए बहुत समय मिल गया था। लॉक डाउन से रोज के कामों का अनुशासन बिगड़ गया था। देर रात तक जागना और सुबह देर तक सोए रहने से मम्मी बहुत परेशान हो जाती थी। बार–बार आवाज दे देकर उठाती थी। नहाने, नाश्ता और खाने के लिए बार–बार मम्मी बुलाती थी। दिन भर रसोई और घर के काम मम्मी के लिए बढ़ गए थे।

**मास्टर अमृत जैन**

**हम सबको मिलकर कोरोना को हराना है**
**घर से हमें कहीं नहीं जाना है।**
**हाथ किसी से नहीं मिलाना है**
**चेहरे पर हाथ नहीं लगाना है।**
**बार–बार अच्छे से हाथ धोना है**
**सेनेटाईज करके देश को स्वच्छ बनाना है।**
**बचाव ही इलाज है यह समझाना है**
**कोरोना से हमको नहीं घबराना है**
**सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है**
**अपने और अपनो के साथ**
**देश के लिए सभी को यह कदम उठाना है**
**हम सबको मिलकर कोरोना को हराना है।**

**मास्टर गौरव**

कोरोना के कारण अचानक स्कूल बंद हो जाने से मेरी पढ़ाई बहुत डिस्टर्ब हो गई थी। घर में बंद रहना मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। लोगों से मिलना–जुलना बंद हो गया, ऐसा लगा जैसे इंसान इंसान से दूर हो गया है। लॉक डाउन का समय बहुत ही मुश्किल से बीता।

**सुश्री निकिता**

सीधे हाथ में प्लास्टर लगने से वह उल्टे हाथ से आटा गूंथती थी बड़ी दिक्कत होती थी। हम भाई–बहिन ने आटा गूंथना और रोटी बेलना भी सीख लिया। टीवी देखना, गाने सुनना, पढ़ना, सोना और खाना कभी–कभी बहुत बोरियत लगती थी।

**मास्टर अम्बिक जैन**

कोरोना लॉक डाउन बहुत अच्छा लगा। क्वालिटी टाईम स्पेंड किया। घर में ही रहे बाहर नहीं गए। बाहर नहीं जा सकते थें तो बाहर की चीजें भी नहीं खाई। भीड़ से दूर रहे। हर बीस मिनट में साबुन से हाथ धोए और मास्क पहना। सब्जी, फ्रूट और बाहर के सामान को पहले धूप में रखा और अच्छी तरह धोकर घर में काम में लिया। आस–पड़ोस के लोगों के साथ भी सोशियल डिस्टेंसिंग रखी। कोरोना से बहुत इफेक्ट पड़ा घर में 8 महीने बैठना पड़ा जो कभी सोचा भी नहीं था। घर में खुद से ही आईसक्रीम, चाउमिन और दूसरी खाने की चीजें यू ट्यूब से बनानी सीखी। पहले हाथ धोने की परवाह नहीं करते थें कोरोना के बाद हाईजिन पर बहुत ध्यान दिया है। कुछ नुकसान भी हुआ है कहीं बाहर नहीं जा सकते किसी से मिल नहीं सकते थे।

**सुश्री सांची सिंघवी**

कोरोना से स्कूल की छुटट्ीयां हो गई। शुरू में तो बहुत मजा आया लेकिन शैतानियों के कारण मम्मी–पापा को बहुत परेशान किया और बार–बार डांट खाई। कई बार तो पापा से पिटाई भी खाई। रोज नया तरह का खाना खाया और बनाना भी सीखा। पीजा, बर्गर और केक खूब खाया। घर में बंद रहने पर घर के खेल ही ताश और बेंडमिंटन ज्यादा खेला।

**मास्टर मोहित**

कॉलेज की छुट्टियां होने से एमबीबीएस के थर्ड ईयर की तैयारी के लिए बहुत अच्छा समय मिल गया। खुद से और ऑन लाईन पढ़ाई बहुत अच्छे से की।बचपन से आज तक इतना समय मम्मी के साथ कभी नहीं बिताया था जो कोरोना ने देकर बहुत खुश कर दिया। घर पर सब की रोज नई–नई फरमाईशें कैसे भी करके मम्मी पूरी कर ही देती थी। मम्मी कभी थकती नहीं। मम्मी के

# कोरोना

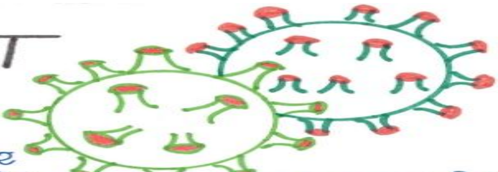

एक घातक बिमारी से अनजान दुनिया अपने काम पर चल रही थी। तभी एक रदिन चीन के वुहान शहर मे अजीब तरह की बिमारी फैलने लगी लोग इस बात से बेखबर थे की यह बीमारी एक महामारी का रूप ले लेगी। आम लक्षण के कारण सब इसी आम मानने लगी चीनी सरकार ने इस बात को गुप्त रखा वहा इस बीमारी का पहला मरीज 2019 के दिसंबर मे ही आ गया था। जब यह बीमारी पुरी तरह से चीनी सरकार के काबू से बाहर हो गई पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। यह बीमारी दुसरे देशो तक पहुच चुकी थी। आम लक्षण के कारण पता भी नही चलता था की आप को कोरोना हो गया है। डर के कारण लोग इधर उधर दौड़ने लगे थे। अब तक यह पता नहीं पता था की यह किस तरह की महामारी है। भारत मे तो यह 30 जनवरी को पहला मरीज आया था। वो भी इटली के दंमती थे वृद्ध लोग थे। जयपुर, दिल्ली और आगरा मे लोग पर्यटन के लिए आए थे और उन मे ही संक्रमण मिला था।

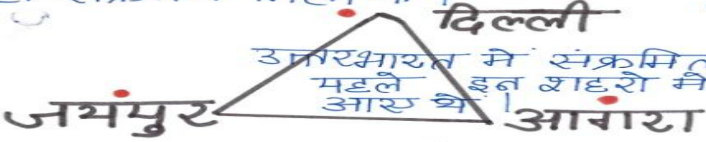


बच्चो के स्कूल, आफिस बंद कर दिए गए। लोगो की बच्चों के ऊपर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। बच्चो के मन में डर की भावना आ गई।

सरकार लगातार अपनी तरफ से पूरे प्रयास कर रही थी। लोगो को घर से बाहर न निकलने को मना कर रही थी। लॉकडाउन की स्थिति आ चुकी थी। हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने बहुत सी फैसले लेते हुए 21 मार्च को लॉकडाउन का ऐलान कर दिया और साथ मे यह भी नहीं पता था की कब तक है।

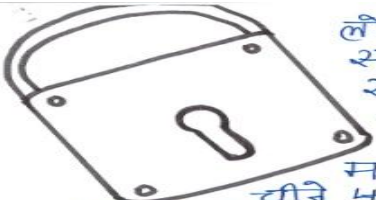

लोगो पता लगने पर लोगो ने राशन का सामान और बहुत से सामान खरीद लिए। एक बार लॉकडाउन लगने के बाद न तो सरकार को पता था की यह कब तक लगा रहेगा और न आम जनता को। गरीब और मजदूरो को घर तक अनाज और महत्वपूर्ण चीजे पहुँचाई जा रही थी। पुलिस लोगो को घर से निकलने पर मना व पिटाई करती थी। इस भय लोग बाहर नही निकलते थे। घर मे रह कर लोग एक दुसरे के और करीब आने लगे आपस मे प्रेम बड़ा। लॉकडाउन खुलने के बाद लोगो मे डर भी था और काम का लोड भी था। बच्चो की ऑनलाइन क्लास चल रही थी। सरकार के अथाह प्रयास के कारण हमारे भारत मे न तो इतने संक्रमित आए और न ही ज्यादा लोग मरे। लोगो को अपने खान-पान मे बहुत बदलाव किए पौष्टिक आहार ज्यादा लिए।

कोरोना के लक्षण :-

1) बुखार, सूखी खांसी, थकान
2) सांस लेने मे तकलीफ
3) स्वाद और गंध का पता न चलना
4) सीने मे दर्द या दबाव
5) गले मे खराश

कोरोना से बचाव के उपाय :-

1) मास्क पहने
2) हाथ साबुन और पानी से धोएं
3) उचित दूरी बनाए रह रखे।
4) आंखे, नाक या मुंह न छुएं।
5) अगर आप सही महसुस न करे तो घर पर रहें।

## अभी मास्क ही वैंक्सीन है।

AVANI SAIN
अवनी सैन
FATHER - Manish Kumar

# कोविड जागरूकता अभियान

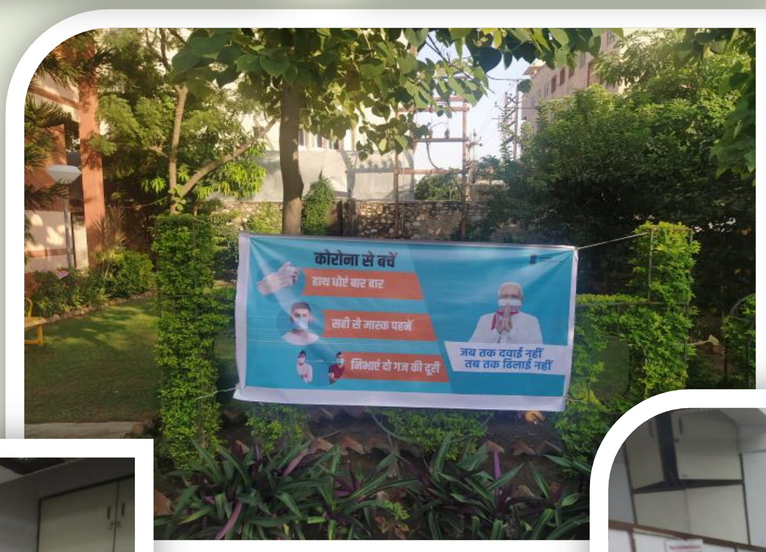

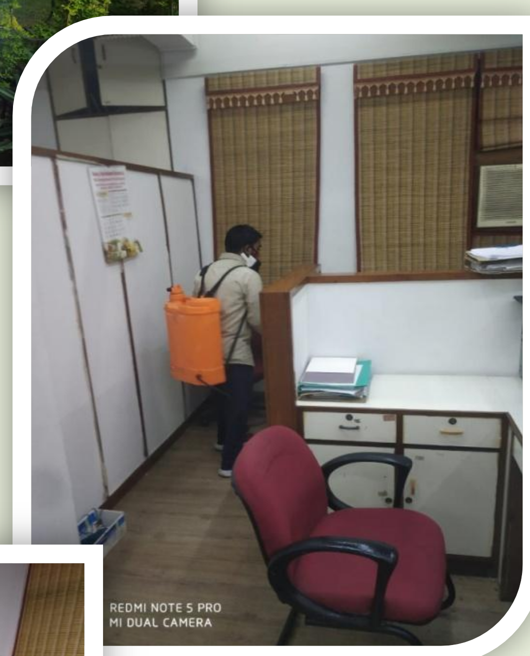


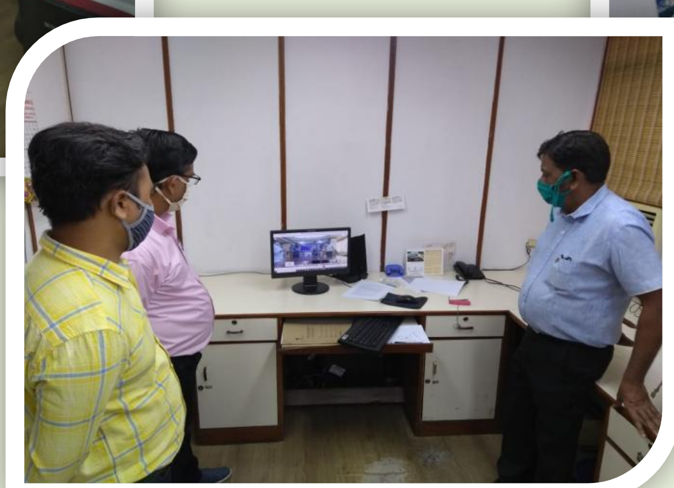

# हडको मेरी नज़र में

कॉस्ट एण्ड मैनेजमेंट अकाउंटेंट की परीक्षा देने के तुरंत बाद मुझे हडको, जयपुर में बतौर मैनेजमेंट ट्रेनी कार्य करने का अवसर मिला, इससे पूर्व मैनें किसी पीएसयू में किसी भी प्रकार से कार्य नहीं किया। हडको में काम करना मेरा पहला अनुभव है जोकि बहुत संतोषजनक है।

मैनेजमेंट ट्रेनी के रूप में कार्य करते हुए मुझे कई प्रकार के कार्य जैसे जनरल अकाउंटस, बीपीवी, बीआरवी व जेवी बनाना, टीडीएस व जीएसटी पर कार्य, पोर्टल पर मासिक तथा वार्षिक रिटर्न का वेरिफिकेशन एवं रिकॉन्सीलिएशन, रिकॉन्सीलिएशन पर पोर्टल और जनरल अकाउंट्स के मध्य आने वाले वेरिएशंस का समायोजन करना आदि कार्य नए अवसर मिलना मेरे लिए सुखद अनुभव रहा है।

हडको, जयपुर का कार्य पर्यावरण बहुत प्रेरणादायक और ऊर्जावान है। साथी सदस्यों का व्यवहार सहयोगात्मक, प्रेरणास्पद और कदम–कदम पर सामंजस्यपूर्ण है जिनसे हर रोज कुछ न कुछ नया सीखने को मिल रहा है। हडको संस्था उन्नतिशील संस्था है जो विभिन्न क्षेत्रों में वित्तीय सहयोग करके देश के विकास में अपना योगदान दे रही है। हडको में काफी अच्छी संभावनाएं उपलब्ध है और हडको में मैं प्रबंधक प्रशिक्षु के तौर पर कार्य करके बहुत गौरान्वित महसूस करता हूँ। यहाँ सीखे गए कार्य व गुणवत्ता मेरे भविष्य के साधक होने में बहुत मददगार होंगे।

**हर्ष खण्डेलवाल**
**प्रबंधक–प्रशिक्षु**

सी. एम. ए. करने के साथ हडको में मेरा प्रथम प्रशिक्षण अनुभव है। हडको में वित्त विभाग के अन्तर्गत प्रशिक्षण करने का मुझे अवसर मिला। इसके अन्तर्गत मैनें ऋण लेखा विभाग एवं सामान्य लेखा विभाग दोनों विभाग में कार्य किया। ऋण लेखा विभाग के अन्तर्गत मैनें विभिन्न संस्थाओं को दिये गये ऋण पर ब्याज, चक्रवर्ती ब्याज एवं दंडात्मक ब्याज इत्यादि की गणना कर संस्थाओं को भेजे गये मांग पत्रों के बारें में जानकारी प्राप्त की। हडको के द्वारा संचालित सॉफटवेयर में संस्थाओं से प्राप्त पुर्नभुगतान को इंद्राज आदि करना।

सामान्य लेखा विभाग में कौन से खर्चो को किस मद में प्रविष्टि किया जाना है, खर्चों के स्वभाव के बारे में जानना। सेवा एवं वस्तु कर का हडको के बारें में जानना। सेवा एवं वस्तु कर का हडको के विषय में किस तरह व कितना उपयोग किया जाता है, कौनसी सेवाओं पर हडको को आई.टी.सी. प्राप्त होती है एवं कौनसी सेवाओं पर हडको को आई.टी.सी. प्राप्त नही होती है, के बारें में जानकारी प्राप्त करना एवं साथ ही भुगतान, प्राप्ति एवं समायोजन वाउचरों का हडको के द्वारा संचालित सॉफटवेयर में इंद्राज करना इत्यादि जानकारी मेरे लिये काफी रोचक, रूचिवर्धक तथा काफी कुछ सिखनें को मिला।

व्यापक व्यक्तित्व विकास एवं प्रेरणादायक है। हडको द्वारा प्रदत्त प्रशिक्षण सिर्फ एक सफल प्रशिक्षु ही नहीं अपितु मेरे व्यक्तिगत मानसिक एवं बौद्धिक विकास के साथ, संप्रेषण व नेतृत्त्व क्षमता का विकास करने में सहायक बन रहा है साथ ही टीम के साथ कार्य करने के लाभ व संभावनाओं का संज्ञान हुआ है।

कार्यालय के सदस्य कर्मियों का व्यवहार, सामंजस्यता, सहयोग व प्रेरणा मेरी कार्यशैली को बहुत प्रौन्न्त कर रहा है।

**तृप्ति पठानी**
**प्रबंधक–प्रशिक्षु**

# जानिए वयस्कों के लिए कौन – कौन से टीके है?

जन्म से दस वर्ष तक कई टीके लगवाने की सलाह चिकित्सक द्वारा दी जाती है। टीकों से बीमारियों से बचाव होता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। कई टीके ऐसे भी होते हैं जिन्हें वयस्क होने पर भी चिकित्सक की सलाह से लगवाए जा सकते हैं और रोगों से दूर रहा जा सकता है। मधुमेह रोगियों को चिकित्सक की सलाह पर ही टीकाकरण करवाना चाहिए। यदि गलती से कोई टीका दुबारा लग भी जाता है तो स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है।

इन्फ्लूएंजा का टीका एक वर्ष में एक लगवाया जा सकता है। इस टीके के प्रभाव से सर्दी–जुकाम व मौसमी बीमारियों से बचाव किया जा सकता है साथ ही श्वसन तंत्र मजबूत होकर रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि होती है। स्वाइन फ्लू जैसी बीमारियों की भी रोकथाम करता है।

टीडेप अर्थात् टिटनेस, डिप्थीरिया व काली खाँसी दूसरे अर्थों में पर्टुसिस का टीका बैक्टीरिया से उत्पन्न होने वाले रोगों से बचाता है। बचपन में नहीं लगा है तो दस वर्ष में एक बार टीडेप व टीडी का बूस्टर डोज लगवाया जा सकता है।

रिकॉम्बिनेंट जोस्टर का टीका त्वचा पर पानी भरे हुए दाने निकलने से रोकने के लिए लगवाया जा सकता है। इस रोग को हरपीज जोस्टर भी कहा जाता है। इसकी चिकित्सक के दिशानिर्देश में दो खुराक ली जाती है। हरपीज जोस्टर चिकनपॉक्स फैलाने वाले विषाणु वेरीसेला जोस्टर द्वारा ही फैलती है।

चिकनपॉक्स वेरीसेला की दो खुराक लेनी होती है यह चिकनपॉक्स (माता) से बचाव करता है। एक खुराक लेने के 4–8 सप्ताह के बाद दूसरी खुराक लेनी चाहिए फिर दुबारा लेने की आवश्यकता नही होती है।

हेपेटाईटिस ए और बी का टीका लीवर की घातक और गंभीर बीमारियों से बचाव करता है। इस टीके की दो या तीन खुराक चिकित्सक के निर्देश में दी जाती है। इस टीके का प्रभाव दस वर्ष तक रहता है। चिकित्सक के मार्गदर्शन में बूस्टर डोज भी ली जा सकती है।

व्यस्कों को भी कई बीमारियों से बचाव के लिए डॉक्टर के दिशा–निर्देश में टीके लगवाया जाना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा है।

एमएमआर का टीका यदि बचपन में नहीं लग पाया है तो व्यस्क होने पर एक खुराक ली जा सकती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता होने पर चिकित्सक के निर्देश में 4–8 सप्ताह के भीतर दो बार लगवाया जा सकता है। एमएमआर अर्थात् मीजल्स, मम्स एंड रूबेला होता है दूसरे शब्दों में यह खसरा, गलगण्ड और जर्मन खसरा है।

टीसीवी टायफॉइड का टीका है। इस टीके का प्रभाव सात वर्ष तक रहता है।
यह टायफाईड बुखार से बचाता है। यह टीका इंजेक्शन तथा मुँह द्वारा लिया जा सकता है। मुँह द्वारा यह खुराक एक दिन के अंतराल पर चार खुराक ली जाती है तथा इंजेक्शन द्वारा टीका चार सप्ताह के अंतराल पर तीन बार लगाया जाता है।
न्यूमोकॉकल वैक्सीन फेफड़े व निमोनिया संबंधी बीमारियों से बचाव करता है। चिकित्सक के निर्देश में 65 वर्ष से कम आयु के व्यस्कों को एक–दो खुराक दी जा सकती

है तथा इससे अधिक आयु के लोगों को एक खुराक देने की जरूरत होती है।

हिव वैक्सीन एच.आई.वी. से बचाव करती है। यह हिमोफिलियस इन्फ्लूएंजा टाइप बी वैक्सीन है। इसकी एक खुराक किसी भी उम्र में ली जा सकती है किंतु जिन्हें एच. आई. वी. संक्रमण है उन्हें यह टीका नहीं लगवाना चाहिए।

एच. पी. वी. वैक्सीन जिसे ह्यूमन पैपिलोमा वायरस कहा जाता है। यह टीका स्त्रियों में सरवाइकल तथा पुरूषों में गले के कैंसर से बचाव के लिए लगाया जाता है। यदि यह टीका बच्चों को 9 वर्ष की उम्र तक नहीं लग पाया है तब यह टीका 26 वर्ष की आयु में चिकित्सक के निर्देश में लगवाया जा सकता है।

कोवैक्सीन और कोविशिल्ड या अन्य कोई वैक्सीन जोकि कोरोना वायरस से बचाव के लिए उपयोगी है, चिकित्सक के निर्देश तथा देखरेख में ही लगवाई जानी चाहिए।

टीका लगवाने से पहले जान लें–बिना डॉक्टर की सलाह के टीके नहीं लगवाए जाने चाहिए। खासतौर पर गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों को टीका लगवाने से पहले चिकित्सक से सलाह जरूर लेनी चहिए।

**डॉ प्रकाश जैन**
**प्रबंधक–प्रशासन**

## जिन्दगी

समुद्र के किनारे एक लहर आई। वो एक बच्चे की चप्पल साथ बहा ले गई। बच्चे ने रेत पर अंगुली से लिखा समुद्र चोर है।

उसी समुद्र के दूसरे किनारे पर कुछ मुछआरों ने बहुत सारी मछली पकड़ी। एक मछुआरे ने रेत पर लिखा समुद्र मेरा पालनहार हैं

एक युवक समुद्र में डूब कर मर गया। उसकी माँ ने रेत पर लिखा –समुद्र हत्यारा है।

दूसरे किनारे पर एक गरीब बूढ़ा टेढ़ी कमर लिए रेत पर टहल रहा था। उसे एक बड़ी सीप में अनमोल मोती मिला। उसने रेत पर लिखा –समुद्र दानी है।

अचानक एक बड़ी लहर आई और सारे लिखे को मिटा कर चली गई। लोग समुद्र के बारे में जो भी कहें लेकिन विशाल समुद्र अपनी लहरों में मस्त रहता है। अपना उफान और शांति वह अपने हिसाब से तय करता है। अगर विशाल समुद्र बनना है तो किसी के निर्णय पर अपना ध्यान न दें। जो करना है अपने हिसाब से करें जो गुजर गया उसकी चिंता न करें। हार–जीत, खोना–पाना या सुख–दुःख इन सबके चलते मन विचलित न करें। अगर जिंदगी सुख–शांति से ही भरी होती तो आदमी जन्म लेते समय रोता नहीं। जन्म के समय रोना, मर कर रूलाना इसी के बीच के संघर्ष भरे समय को जिंदगी कहते हैं। कुछ जरूरतें पूरी तो कुछ ख्वाहिशें अधूरी इन्ही सवालों का संतुलित जवाब है–जिंदगी।

**भानू प्रकाश मालाकार**
**ए एफ एस जी**

# '' सोशल मीडिया – एक अभिशाप ''

**सोशल** मीडिया या सोशल साइट्स, दोस्तों आज कल इस शब्द की गूंज हमें काफी सुनाई देती है, कुल मिलाकर सोशल मीडिया या सोशल साईटस एक इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यम है, जिसके जरिये लोग उक्त माध्यम में शामिल सदस्यों के साथ विचारो का आदान प्रदान कर सकते हैं। सोशल मीडिया की शुरूआत लगभग 1995 के आस–पास हुई थी, जब इसकी शुरूआत एक सकारात्मक सोच के साथ हुई थी। किंतु आज इसके प्रयोग में नेगेटिव सोच आ चुकी है। वो कहते हैं ना कि हर चीज के दो पहलू होते हैं, एक अच्छा और दूसरा बुरा। मैं 4 मुख्य कारणों से बताने की कोशिश करूंगा कि आज सोशल मीडिया वरदान से अभिशाप तक पहुंच गया है।

## 1. अकेलापन

आपने कई बार देखा होगा कि घर के जितने भी सदस्य है, अपने अपने मोबाईल से अपने अपने घर के कोने में बैठे हुए सोशल मीडिया पर लगे रहते है, घंटो तक अकेले में बैठे रहते हैं। किसी को कोई होश नहीं कि उनके आस–पास क्या हो रहा है। लोग इसके आदि हो चुके हैं। आज हम सुबह से शाम, शाम से सुबह तक सोशल मीडिया से घिरे रहते हैं और इसने हमें अपने माया जाल में फंसा लिया है। छोटे, क्या बडे, सभी को सोशल मीडिया ने अपने वश में कर लिया है तथा ये रात–दिन आनलाईन रहकर, Messeging, Calling, Chatings, Sanding, Receiving, Uploading, Reading करते रहते है। इन सबने एक अलग ही दुनियां को जन्म दिया है और इस वजह से हमारे जीवन में अकेलापन बढ़ा है। हम अकेला रहना पसंद करने लगे हैं। सोशल मीडिया ने हमारी लाइफ खराब कर दी है।

आपने यह भी देखा होगा कि किसी भी मोबाईल टावर के नीचे बडी तादाद में बच्चे इस कदर सोशल मीडिया पर मशगूल रहते हैं तथा अपने घर–परिवार को छोड़ अपने में ही उलझे रहते हैं। यही प्रवृत्ति बच्चों में अकेलेपन को दावत दे रही है। इसके चलते परिवार में दूरियां बढ़ रहीं है।

दीवाली की शुभकामनाएं देनी हो या होली की, बर्थडे की बधाई हो या शादी की सालगिरह की बधाई, लोग फेसबुक व वाटसअप, जैसी सोशल साईटस पर बधाई संदेश देकर ही इतिश्री कर लेते हैं। यहां तक कि फूलों के फोटो तथा मिठाई की फोटो भेजकर ही काम चला लेते है। जिसके कारण दिवाली की रंगत, होली के रंग, बधाईयों का एहसास खत्म सा हो गया है। लोगो के सम्बंधों में अजीब सा ठहराव हो गया है तथा रिश्तों की दूरियों का भी जन्म हुआ है। गले मिलकर शुभकामना देने का एहसास लोग भूलते जा रहे हैं।

## 2. डिप्रेशन

कम उम्र के बच्चों में भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है जिसका उन पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। एसोचेम के सर्वे के मुताबिक जितने बच्चे सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रहे हैं, उनमें से 73 प्रतिशत बच्चों की उम्र 8 से 13 साल है, जबकि 13 साल से कम उम्र के बच्चों पर

सोशल मीडिया पर अकाउंट खोलने पर प्रतिबंध है। ज्यादातर वो बच्चे है, जिनके माँ–बाप नौकरी पेशा है और अपने बच्चों को समय नहीं देते है। ऐसे बच्चे ज्यादा से ज्यादा समय सोशल मीडिया पर रहते हैं और अकेले रहना पसंद करते हैं जिससे ये बच्चे भारी डिप्रेशन में आकर गलत कदम उठाने को मजदूर हो जाते है। सोशल मीडिया का प्रयोग इतना हो गया है कि बच्चे 10 से 12 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं। यह नशा इतना सर चढ़कर बोलता है कि वे अपने परिवार को समय नहीं दे पा रहे हैं। उनके परिवार वालों के मना करने पर गुस्से में आकर घर का सामान भी तोड़ने लगते है। महानगरों में तो अब जल्दी ही सोशल मीडिया addiction के लिए De addiction सेंटर भी खुलते जा रहे हैं। इससे साफ है कि सोशल मीडिया को इस्तेमाल अब बीमारी का रूप ले रहा है।

### 3. समाज में द्वेष

आज आपने देखा होगा कि सोशल मीडिया पर कई ग्रुप्स बन गए है फ्रेंडस ग्रुप, फैमिली ग्रुप, स्कूल ग्रुप और कई ग्रुप समाज और कास्ट से संबंधित बने हुए है यहां मैं खास तौर पर ग्रुप्स पर बात करूंगा जो ग्रुप समाज या कास्ट पर बनाये गए है इन ग्रुप्स पर एक समाज द्वारा दूसरे समाज के प्रति घृणित भावना रखने लगा है। सोशल मिडिया पर केवल एक पोस्ट से कोई भी उपद्रव या कोई भी साम्प्रदायिक दंगे फैल सकते है, इससे यह साफ जाहिर होता है कि आज सोशल मीडिया कितना खतरनाक हो गया है सोशल मीडिया को अफवाह फैलाने का मुख्य प्लेटफार्म समझा जाने लगा है। सोशल मीडिया पर धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाली कई बाते फर्जी पोस्ट की जाती है, जो कि समाज तथा देश के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। टैक्नॉलोजी का सहारा लेकर अमेंडेड फोटो पोस्ट की जाती है, जिन्हें लोगों द्वारा सच समझकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है तथा यही पोस्ट लाइक/अन लाइक के चक्कर में पुरे ग्रुप को ठेस पहुंचाती है तथा उनका समय बर्बाद करती है।

### 4. सुरक्षा

सोशल मीडिया आज देश तथा लोगों की सुरक्षा के लिए बडा खतरा बन गया है इन सोशल साइट्स से देश की सुरक्षा को ठेस पहुंचाने के लिए भी एक विशेष ग्रुप द्वारा इसका उपयोग किया जाता है जोकि आने वाले समय में काफी गम्भीर समस्या को जन्म दे सकता है। हमें इस बात का अंदेशा ही नहीं है कि सोशल मीडिया पर हम जो बातें या डाटा शेयर करते है, उनका प्रयोग कौन और किस प्रकार हो रहा है। डाटा कहां सेव हो रहा है। आप को याद होगा कि अभी कुछ समय पहले खबर आई थी कि सोशल मीडिया पर उपलब्ध पर्सनल सूचना लीक हो गई थी तथा सम्बंधित द्वारा इस बारे में माफी भी मांगी गई थी।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि इसमें कोई दो राय नहीं कि सोशल मीडिया आज लोगों के लिए बहुत ही जरूरी हो गया है, लेकिन जो दूसरा पहलू है, उससे बचने की जरूरत है क्योंकि जब किसी भी चीज का दुरूपयोग होने लगता है तो वो वरदान नहीं अभिशाप बन जाती है।

**नरेश कुमार ठागरिया**
**सहायक महाप्रबंधक–आईटी**

# ''कार्यालय में लंच के दौरान कुछ नया''

**हर** कार्यालय में दोपहर के समय लंच ब्रेक होता ही है। इस दौरान साथी कार्मिकों के साथ लंच के साथ ही हँसी – मजाक कर ऑफिस के तनाव को थोड़ा कम करते है, लेकिन आप चाहे तो लंच ब्रेक के दौरान बहुत कुछ अतिरिक्त भी कर सकते है, जिससे आपको लाभ ही होगा। कार्यालय से मिले इस अतिरिक्त समय को सही जगह उपयोग करें और पाएं अच्छी सेहत। लंच के समय आप जो हेल्दी चीज कर सकते हैं वो है हल्का फुल्का व्यायाम /योगा / ध्यान त्यादि। इसी की निरन्तरता में गत कुछ महीनों से कोराना काल में स्वस्थ बने रहने के लिए हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में लंच अवधि में रिफ्रेश / स्वस्थ रहने के लिए लगभग 15 मिनट के लिए क्षेत्रीय प्रमुख मय कार्मिकों द्वारा Youtube पर उपलब्ध विशेषज्ञों के सहयोग से ''मेडिटेशन'' किया जा रहा है जिसका उद्देश्य आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में सुकून की खोज है। इंसान रोज की इस आपाधापी के शोर से थोडी देर के लिए ही सही लेकिन अपने दिमाग को शांत रखता है। ऐसा करने से वो सुख की अनुभूति करता है। अगर आप तनाव में हैं या अप्रसन्न रहते हैं तो आप कुछ समय अपने लिए निकाल कर मेडिटेशन का सहारा ले सकते हैं। अगर दिमाग शांत और प्रसन्न रहेगा तो सभी परेशानियां अपने आप ही हल होने लगेंगी।

**आशीष कुमार**
**सहायक प्रबन्धक**

# पढ़ने वाले बच्चे कैसे–कैसे होते है?

**किताबी कीड़े वाले**–किताबों में ही सिर घुसाए रहने वाले बच्चें 90–95 प्रतिशत अंक प्राप्त होने पर भी रूआसें होकर बड़ी उदासी से कहते हैं–पता नहीं अच्छे नम्बर क्यों नहीं आए। बहुत सोच–सोच विचार करते रहते हैं और खुद को दु:खी और तनावग्रस्त कर लेते हैं कि शायद वह प्रश्न ठीक नहीं था या उसका उत्तर ठीक नहीं दे पाया या टीचर ने कॉपियां अच्छे से नहीं जांची इसीलिए 99.99 या 100 प्रतिशत अंक मेरे नहीं आ पाए। ऐसे बच्चे अधिक से अधिक ज्ञान लेने का प्रयास करते हैं।

**रट्टामार बच्चे**–विषय पर बिना ज्ञान साधे और समझे ऐसे बच्चे प्रश्नों के उत्तर रट–रट कर केवल पास हो जाने भर में यकीन रखते है। ऐसे बच्चों को विषय पर कभी भी पकड़ नहीं होती और ना ही वे किसी को अपने विषय के बारे में पूरी तरह समझा पाने में सक्षम होते हैं। कॉमन सेन्स का प्रयोग नहीं के बराबर कर पाते हैं और एग्जाम में तो रट रटा कर पास हो जाते है किंतु आगे नौकरी या अन्य सेवाओं के लिए इंटरव्यू व संप्रेषण आदि में बहुत नर्वस हो जाते हैं जिससे बेरोजगारी का सामना अधिक करना पड़ता है और जीवन में सफल नहीं हो पाते हैं।

**मौज मस्ती वाले बच्चे**–क्या है? पास ही तो होना है। वैसे भी क्या रखा है पढ़ाई में! माँ–बाप पीछे पड़ जाते हैं इसलिए आ जाते हैं भाई किताबों में टाईम पास करने! ऐसे बच्चे पढ़ाई में नहीं केवल घूमने–फिरने, मौज–मस्ती करने और तफरी मारने के लिए स्कूल–कॉलेज में आते हैं। कक्षा से भाग कर कैंटीन में बैठ जाना, पेड़ की छांव के नीचे बैठकर गप्प और ठहाके मारना या स्कूल से गायब होकर बाजार में टहलने या फिल्म देखने निकल जाते हैं। ऐसे बच्चे पढ़ाई में रूचि कम लेते हैं किंतु दिमाग के तेज होते हैं क्योंकि ऐसे बच्चे थोड़ा सा पढ़कर भी मध्यम श्रेणी तक पास हो ही जाते हैं।

**फैशन की चलती**–फिरती दुकान–लड़के हो या लड़कियां कुछ तो फैशन की हौड़ में खुद को दिखाने के लिए ही नियमित स्कूल आते हैं। अपने पहनावे और फैशनी अंदाज से सबको अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। विषयों के प्रश्नों के उत्तर के बजाए नवीनतम फैशन से संबंधित जानकारी बांटने में सबसे आगे रहते है। ऐसे लड़के व लड़कियां अपने चाहने वालों से हमेशा घिरे रहना पसंद करते हैं और पढ़ाई में मध्यम श्रेणी के फिसड्डी होते हैं।

**डिग्री के भूखे बच्चे**–साम–दाम–दण्ड कैसे भी डिग्री मिल जानी चाहिए। इसके पीछे घरेलू व अन्य कारण हो सकते हैं। पार्ट टाईम जॉब करने वाले बच्चे नियमित कॉलेज नहीं जा पाने के कारण कई बच्चे तो प्राक्सी अटेंडेंस पर निर्भर रहते हैं। इधर–उधर दोस्तों से नोट्स मांगते फिरते है। इम्पोरटेंट प्रश्नों के लिए मोटी रकम तक खर्च कर देते हैं। किताबें उठा कर कभी नहीं देखते और परीक्षा का टाईम–टेबल और दिन आते ही पास बुक या पिछले पांच

सालों के सोल्वड पेपर पर टूट पड़ते है। इनमें से भी 10–15 प्रश्नों के उत्तर रटने की स्थिति रखते है और परीक्षा प्रश्नों के उत्तर कयास लगाकर और तुक्के से देकर आने में अच्छा समझते हैं और पास भी हो जाते हैं।

**कमजोर बच्चे–**ऐसे बच्चे जिन्हें विषय संबंधी पढ़ाई अच्छी तरह से समझना ही नहीं चाहते और ना ही एकाग्रता व जागरूक रहकर शिक्षक से शिक्षा लेने में रूचि रखते हैं। ऐसे बच्चे लापरवाही के कारण पढ़ाई में कमजोर रह जाते हैं और दोस्तों तथा होशियार बच्चों के आगे–पीछे घूमते और ग्रुप डिस्कसन करते नज़र आते हैं।

**मवाली टाईप बच्चे–**ना खुद पढ़ना और ना दूसरों को पढ़ने देना। गुरूओं और शिक्षकों का सम्मान तो दूर–दूर तक भी नहीं करने वाले ऐसे बच्चे स्कूल और कॉलेज में मार–पिटाई व लड़ाई–झगड़ा करके केवल दहशत और उत्पात मचाने का काम करते हैं। अपनी औंछी हरकतों से बदनाम भी रहते हैं। अच्छी शारीरिक कद–काठी और बल का दुरूपयोग करते हैं। छोटे व कमजोर बच्चे इनको देखते ही सहम जाते हैं। पैसे खोंसना, धमकाना, लंच बॉक्स का खाना छिनना आदि राजनैतिक और अवैधानिक गतिविधियों में दादागिरी से लिप्त रहते हैं।

भविष्य की कोई चिंता नहीं होती है कॉलेज या यूनिवर्सिटी में एक विषय से परीक्षा पास करके फिर दूसरे विषय की पढ़ाई के लिए प्रवेश ले लेते हैं और कॉलेज व यूनिवर्सिटी में अनैतिक गतिविधियों से आतंक मचाए रखते हैं। दादागिरी और आवारागर्दी के चलते परीक्षा के समय झूठा मेडीकल प्रमाण देकर परीक्षा में भी गोत मार जाते हैं।

**फर्रे वाले बच्चे–**पूरे साल किताबों को अपनी शक्ल तक नहीं दिखाते और परीक्षा का टाईम–टेबिल व दिनांक मिल जाने के बाद भी पढ़ाई में रूचि के प्रति सक्रियता कहीं नहीं दिखाई देती किंतु परीक्षा के एक दिन पहले इनके परीक्षा के नाम से पसीने छूटने लगते है और एक दिन पहले ही पूरे 24 घंटे तन–मन से तरह–तरह के फर्रे बनाने या नकल करने के साधन जुटाने में लगा देते हैं। ऐसे बच्चे वास्तविकता यह है कि शिक्षक से नहीं खुद से चोरी करते है।

**औसत दर्जे वाले बच्चे–**साल भर पढ़ाई के लिए किताबें सामने रखते है किंतु मन बार–बार इधर–उधर विचलित होता रहता है जिससे टीचर द्वारा पढ़ाया गया पाठ सिर के ऊपर से गुजर जाता है फिर बार–बार शिकायत करते हैं कि पढ़ते तो है किंतु याद नहीं होता। इसके लिए अलग से कोचिंग और ट्यूशन भी लेने है किंतु वहाँ भी स्थिति में अधिक सुधार नहीं आ पाता है। ऐसे बच्चे विषय पर आधी–अधूरी ही सही लेकिन ज्ञान लेने की मशक्कत आधी मंशा के साथ करते है जिससे उनका परिणाम औसत दर्जे का रह जाता है।

**शैलेन्द्र सिंघवी**
**सहायक प्रबंधक–वित्त**

## हडको निवास–होम लोन्स की व्यक्तिगत आवासीय योजना हेतु वर्तमान में लागू ब्याज दरें

| श्रेणी ववरण | ऋण राशि | परिवर्तित ब्याज | स्थाई ब्याज |
|---|---|---|---|
| व्यक्तिगत / समूह व्यक्तिगत आवासीय ऋण योजना :– निर्माण/ खरीद/ मिश्रित ऋण/ प्लाट खरीद/ सुधार हेतु अधिकतम 25 वर्ष तक | रूपये 8 लाख तक (सी.आर.जी.एफ. के अन्तर्गत एवं इसके अलावा) | 9.45% | 9.50% |
| | रूपये 8 लाख से 1 करोड तक | 9.45% | 9.50% |
| **सरकारी कर्मचारी:–(नियमानुसार) 20.05.2016 के पश्चात् स्वीकृत एवं अवमुक्त ऋण राशि हेतु (परिवर्तित ब्याज दर प्रति वर्ष 1 अप्रेल को रिसेट किया जावेगा एवं स्थाई ब्याज दर 3 वर्ष के बाद रिसेट किया जावेगा।** | | | |
| वार्षिक आय 6 लाख (आवेदक एवं सह–आवेदक) एवं आश्रित भी सह–आवेदक हो सकता है यदि विवाहित है | रूपये 20 लाख तक | 8.95% | 9.15% |
| वार्षिक आय 6 लाख से अधिक | रूपये 200 लाख तक | 9.05% | 9.25% |
| अन्य उधारकर्ताओं | रूपये 100 लाख तक | | |
| **दिनांक 09.01.2020 के पश्चात् उन व्यक्तियों को जोकि एस.सी. एस.टी., अलग रूप से सक्षम व्यक्ति, महिला को स्वीकृत ऋण राशि पर यह छूट उन्ही लाभार्थियों को मिलेगी जो आवेदक या सह आवेदक होंगे (परिवर्तित ब्याज दर प्रति वर्ष 1 अप्रेल को रिसेट किया जाएगा एवं स्थाई ब्याज दर 3 वर्ष के बाद रिसेट किया जाएगा।** | | | |
| **सरकारी कर्मचारी** | | | |
| वार्षिक आय 6 लाख (आवेदक एवं सह–आवेदक) एवं आश्रित भी सह–आवेदक हो सकता है यदि विवाहित है | रूपये 20 लाख तक | 8.35% | 8.55% |
| वार्षिक आय 6 लाख से अधिक | रूपये 200 लाख तक | 8.45% | 8.65% |
| अन्य उधारकर्ताओं | रूपये 100 लाख तक | 8.85% | 8.90% |
| **बल्क लोन–एच.बी.ए.** | | | |
| सरकारी/सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा आवास अग्रिम (एसबीए) प्रदान करने हेतु **बल्क ऋण** | वर्तमान मार्ग निर्देशिका के अनुसार (ऋण स्वीकृत 10.10.2016 तक) | 9.40% | 9.50% |
| सरकारी/सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा आवास अग्रिम प्रदान करने हेतु **बल्क ऋण** | वर्तमान मार्ग निर्देशिका के अनुसार | | 8.95% # (Fixed for 1year) |
| **सरकारी बैंक की आवासीय वित्त कम्पनी / सार्वजनजिक संस्थाओं/सरकारी वित्तीय संस्थाओं द्वारा व्यक्तियों को ऋण हेतु बल्क ऋण** | | | |
| केवल ईडब्ल्यूएस हेतु विडो, एससी / एसटी / ओबीसी फिजिकल हैण्डीकैप, अकेली महिला 35 वर्ष से अधिक एवं प्राकृतिक आपदा क्षेत्र | वर्तमान मार्गनिर्देशिका के अनुसार | 9.20% | 9.40% |
| अन्य ईडब्ल्यूएस परिवारों को लिए एवं एक्शन प्लान प्रोजेक्ट सम्मिलित | | 9.30% | 9.50% |
| केवल एलआईजी उधारकर्ताओं हेतु | वर्तमान मार्गनिर्देशिका के अनुसार | 9.40% | 9.60% |
| iii) other than above, (The rate will be net of as the proposals are accepted from agencies having AA rating or above for their resource mobilization programe as per guidelines and in any other,case,specific waiver is obtained from the board with due justification). | वर्तमान मार्गनिर्देशिका के अनुसार | | 9.50%# (Fixed for 1year) |
| 'Rent – to – Own' Scheme ⓿ | As per existing guidelines | 10.45% | 10.65% |

$$ नियम एवं शर्ते लागू

$$ Terms & conditions apply. These benefits can be withdrawn, modified and altered anytime without notice.

- Fixed interest rates will be automatically reset after every 3 years.
- स्थाई ब्याज दर स्वतः ही तीन वर्ष पश्चात् परिवर्तित हो जायेगी।
- Under PMAY beneficiaries qualifying under CLSS (Credit Linked Subsidy Scheme) guidelines of MoH & UPA can also avail interest subsidy given to as per eligible applicant will be at applicable rate of interest.
- प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत लाभार्थियों को सीएलएसएस के अन्तर्गत पत्रताअनुसार ब्याज पर अनुदान राशि देय।
- ⓿A rebate of 0.10% in the applicable floating and fixed rates would be extended for projects exclusively for women police personnel under both project lending as well as under the rent-to-own scheme, Such projects should be independently/exclusively formulated for women police personnel, and should not be part of composite/general scheme meant for all police personnel.
- # Rate would be higher by 0.10% in case of EQI instead of EMI.

# Study Tour of Overseas Professionals

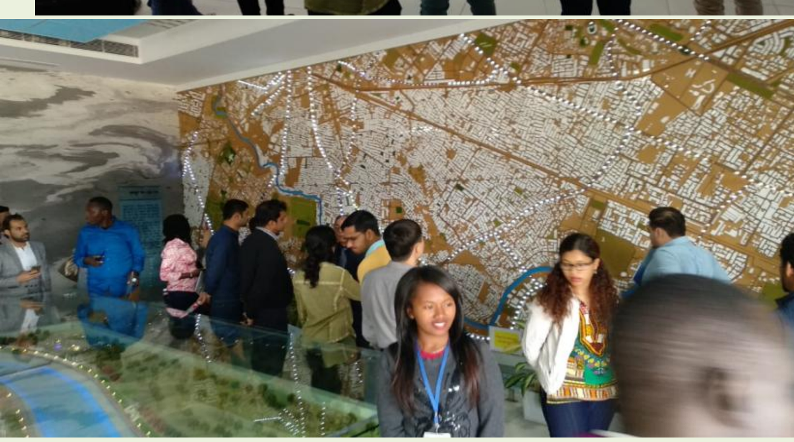

# हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय समाचारों में

## budget likely at ₹784cr, board meet o[n Feb 9]

**WHAT'S ON THE TABLE FOR BOARD MEETING**

- Proposal of ₹784-crore budget
- Proposal to ₹500 crore loan
- Increase stipend of councillors
- New LED lights in each ward
- Discussion on working of private firm for garbage collection
- ₹1.5 crore annual development work in each ward
- Furniture for offices of councillors & allotment of land
- Monthly health check-up of sanitation workers
- Laptops for councillors
- Boat rides at Jal Mahal lake
- Survey of JMC, Heritage records and properties
- Development of Gaushala
- Development of crematoriums and cemeteries
- Tours for councillors to various places in the country to look into sanitation facilities
- Discussions on availability of resources like hoopers, sanitation workers and drivers

ones on field risking their lives picking up garbage. JMC, Heritag[e] 's planning to start boat ride[s] [in] Jal Mahal, one of the iconic tourist spots in the city, to rake in revenue for the corporation. Many proposals like purchasing laptops and increasing stipend for councillors are similar to that of JMC, Greater.

## Civic body planning to [take over] trash collection from p[rivate firm]

Times News Network

**Jaipur:** The private firm responsible for door-to-door garbage collection in the city was reprimanded by JMC-Heritage mayor Munesh Gurjar for their lackadaisical attitude towards sanitation.

At a meeting on Tuesday, Gurjar expressed displeasure at the firm for not working as per the contract. She asked the firm to collect wet and dry waste separately according to the contract of BVG company, which till now hasn't been implemented by the firm.

Helper with vehicles are also not being arranged by the company.

The mayor directed the representatives of the firm to fix the arrangement as per the contract in the next 7 days.

"If the firm does not fix the arrangements as per the contract in the next seven days, then the agreement with the company would be cancelled," said Gurjar.

In the upcoming general body meeting, a discussion will be held on finding alternatives for garbage collection in the city.

According to a senior JMC-Heritage official, the corporation was in the process of purchasing its own hoopers through which it will be able to manage the door-to-door garbage col-

---

**HUDCO**

**HUDCO organises DoPT training for All India Service Officers**

Shri. Durga Shanker Mishra, Secretary, Ministry of Housing & Urban Affairs inaugurated a week-long in-service training programme- 'Financing Urban Infrastructure and Services in India', for All India Service Officers. The Department of Personnel & Training, Government of India sponsored training programme is organized by HUDCO's Research & Training Institute (HSMI) at New Delhi. The training is designed to address key issues in financing urban infrastructure and impart necessary skills for successful execution of such projects. Speaking at the inaugural function, Shri Mishra outlined the contours of urban infrastructure financing and explained how the Government of India is leveraging its resources to generate more funds from other sources, including private investment in projects. Addressing the participants, Shri. Kamran Rizvi, Additional Secretary, MoHUA& CMD, HUDCO, highlighted the Government of India initiatives to tackle challenges in urban infrastructure financing.

---

## हडको ने अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों के लिए डीओपीटी प्रशिक्षण का आयोजन किया

एजेंसी,नवज्योति/नई दिल्ली। आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा ने अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों के लिए शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर का वित्त पोषण एवं भारत में सेवाएं, साप्ताहिक सेवाधीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम हडको के अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एचएसएमआई) की ओर से दिल्ली में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण की रूपरेखा, शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण के प्रमुख मुद्दों तथा ऐसी परियोजनाओं के सफल निष्पादन के लिए आवश्यक दक्षता प्रदान करने की दृष्टि से तैयार की गई। मिश्रा ने शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा भारत सरकार द्वारा परियोजनाओं में निजी निवेश सहित अन्य स्त्रोतों से और अधिक धन राशि उत्पन्न करने के लिए इसके संसाधनों का लाभ उठाने की प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला। कामरान रिजवी, अपर सचिव एमओएचयू तथा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक हडको ने शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण के क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करने की भारत सरकार की पहल पर प्रकाश डाला।

---

## जयपुर ग्रेटर की तरह हेरिटेज निगम भी लेगा 500 करोड़ का लोन, 9 फरवरी को होगी पहली साधारण सभा की बैठक

**साल 2021-22 का बजट रखने सहित 21 प्रस्तावों पर चर्चा होगी, पार्षदों का भत्ता बढ़ाने, लैपटॉप देने और भ्रमण का प्रस्ताव भी शामिल**

सिटी रिपोर्टर | जयपुर

जयपुर ग्रेटर की तरह हेरिटेज नगर निगम भी हुडको से करीब 500 करोड़ रुपए का ऋण लेगा। वहीं [तात्कालि]क जरूरतों की पूर्ति के लिए अलग से 30 करोड़ रुपए का ऋण लेगा। इसे लेकर 9 फरवरी को होने वाली हेरिटेज नगर निगम की साधारण सभा (बोर्ड बैठक) में यह

**हर वार्ड में 1.5 करोड़ के विकास कार्य करवाने का प्रस्ताव, जलमहल को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव रखे जाएंगे**

**ये प्रस्ताव भी शामिल**

- भवन विनियम 2020 नगर निगम हैरिटेज क्षेत्र (चारदीवारी को छोड़कर) में लागू करने।
- वार्ड वाइज नई लाइटें
- सफाई कर्मचारियों का मासिक हैल्थ चैकअप।
- भूमिगत यूटिलिटी सर्विसेज की डिजीटल मैपिंग करवाने का प्रस्ताव।

### ग्रेटर में कमेटियों पर विवाद, सफाई समति के सदस्य ने इस्तीफा दिया

जयपुर | जयपुर ग्रेटर नगर निगम में कमेटियों के गठन के साथ ही विवाद भी शुरू हो गया है। नतीजा यह निकला कि कमेटियों के बनने के पांच दिन बाद ही बुधवार को निर्दलीय पार्षद जय वशिष्ठ निगम ग्रेटर की साधारण सभा में अपनाई गई प्रक्रिया से असंतुष्ट एवं नाराज हैं। पार्षद जय वशिष्ठ ने बताया कि सर्वप्रथम तो प्रस्तावों को क्रमवार (1,2,3,4 ,5,6,7,8) न कर (1,2,,4,5,6,7,8,3) से सदन में पेश किया, प्रस्ताव बिंद 3 समिति गठन को सबसे

---

## [...] सपाट की तैयारी

### नौ फरवरी को होगी हैरिटेज नगर निगम की साधारण सभा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. राजधानी की दोनों शहरी सरकारें अब लोन के भरोसे चलेंगी। ग्रेटर नगर निगम के बाद अब हैरिटेज नगर निगम भी हाउसिंग एंड अरबन कॉर्पोरेशन (हुडको) से 500 करोड़ रुपए का लोन लेने की तैयारी कर चुकी है। नौ फरवरी को साधारण सभा में ये प्रस्ताव लाया जाएगा। ग्रेटर नगर निगम मुख्यालय के सदन में सुबह 11 बजे से बैठक होगी। इस दौरान

**ये प्रस्ताव भी शामिल**

हर वार्ड में 1.5 करोड़ रुपए के विकास कार्य, वार्ड वाइज नई लाइटें लगवाने पर विचार, बीवीजी की कार्य व्यवस्था की समीक्षा, नगरीय विकास कर और राजस्व संबंधी कार्यों पर चर्चा, सफाई कर्मचारियों का महीने में एक बार हैल्थ चैकअप, निगम की संपत्तियों का सर्वे व रिकॉर्ड डिजीटलाइजेशन करने, निर्माण व खाद्य सामग्री की जांच के लिए

---

## ग्रेटर के बाद अब हैरिटेज नगर निगम भी हुडको से 530 करोड़ रु. का ऋण लेगा

**पार्षदों के भत्ते बढ़ाने, उन्हें लेपटॉप देने और अन्य शहरों में घुमाने की तैयारी**

महापौर मुनेश गुर्जर

- 9 फरवरी को होने वाली साधारण सभा की बैठक के लिए 21 प्रस्ताव तैयार
- सफाई और राजस्व वृद्धि के साथ-साथ गौशाला व जलमहल को पर्यटन स्थल बनाने पर चर्चा होगी

इसके साथ ही पार्षदों के भत्ते बढ़ाने, उन्हें लेपटॉप देने और अन्य शहरों का भ्रमण करवाने की तैयारी है। यह यात्रा अन्य शहरों की सफाई व्यवस्था देखने सौम्या गुर्जर ने हर पार्षद के क्षेत्र में अकुशल कर्मचारी (बीट्स) देने का प्रस्ताव पास किया, वहीं प्रस्ताव हैरिटेज में भी रखा गया है। डोर-टू-

**इन प्रस्तावों पर भी होगी चर्चा...**

- चारदीवारी को छोड़कर हैरिटेज नगर निगम क्षेत्र में भवन विनियम-2020 नगर निगम में लागू करना।
- वार्ड वाइज नई लाइटें लगवाने पर विचार
- बीवीजी की कार्य व्यवस्था की समीक्षा
- नगरीय विकास कर व राजस्व कार्यों पर चर्चा
- वार्ड कार्यालयों में फर्नीचर उपलब्ध कराने, नए वार्ड कार्यालयों के लिए जमीन आवंटन व निर्माण का प्रस्ताव
- सफाई कर्मचारियों का मासिक हैल्थ चैकअप

---

## डीओपीटी प्रशिक्षण का आयोजन किया

जयपुर| अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों के लिए 'शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर का वित्त पोषण एवं भारत में सेवाएं' साप्ताहिक सेवाधीन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम हडको के अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की ओर से दिल्ली में आयोजित हुआ। इस प्रशिक्षण की रूपरेखा, शहरी इन्फ्रास्ट्रक्चर वित्त पोषण के प्रमुख मुद्दों तथा ऐसी परियोजनाओं के सफल निष्पादन के लिए आवश्यक दक्षता प्रदान करने की दृष्टि से तैयार की गई है। उद्घाटन समारोह में आवासन सचिव एवं शहरी कार्य मंत्रालय दुर्गा ... रूपरेखा प्रस्तुत ... वेश सहित अन्य ... इसके संसाधनों

---

**एजेंडा तैयार** | ग्रेटर नगर निगम की पहली साधारण सभा की बैठक 28 को प्रस्तावित

## कर्ज से चलेगी ग्रेटर सरकार, हुडको से 600 करोड़ लेने की तैयारी

### साधारण सभा में लाया जाएगा प्रस्ताव, बीट सिस्टम फिर से शुरू करने की कवायद

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जयपुर. ग्रेटर नगर निगम की आर्थिक स्थिति बेहद खराब है। बकाया चुकाने के लिए अब ग्रेटर नगर निगम हाउसिंग एण्ड अरबन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हुडको) से लोन लेने की तैयारी में हैं। बकाया चुकाने और शहर के विकास कार्यों के लिए निगम 600 करोड़ रुपए लोन लेगा। इसका प्रस्ताव साधारण सभा में रखा जाएगा। साधारण सभा की पहली बैठक 28 जनवरी को होगी। निगम के सभी 150 पार्षदों से प्रस्ताव लिए गए हैं। उसी के आधार पर एजेंडा तैयार किया गया है।

**इन मुद्दों पर भी होगी चर्चा**

- अब तक पार्षदों को 3750 रुपए प्रति माह भत्ता मिलता है। इसे बढ़ाकर 11,000 रुपए का प्रस्ताव लाया जाएगा।
- ग्रेटर निगम सीमा क्षेत्र में बीवीजी कम्पनी घर-घर जाकर कचरा नहीं उठा रही है। इस मुद्दे पर चर्चा की जाएगी।
- पार्षदों ने लैपटॉप की भी मांग की है। पिछले बोर्ड में महापौर विष्णु लाटा ने पार्षदों को लैपटॉप भी दिए थे।
- निगम के प्रत्येक वार्ड में दो कर्मचारियों को लगाने की मांग का प्रस्ताव भी बोर्ड मीटिंग में रखा जाएगा।

### ये हैं प्रस्ताव

लोन के अलावा अन्य आठ प्रस्ताव भी सदन में रखे जाएंगे। इनमें पार्षदों का भत्ता बढ़ाए जाने से लेकर नए बिल्डिंग बाइलॉज को लागू करने, समाज के कमजोर बच्चों के लिए शहरी क्षेत्र में स्कूलों की व्यवस्था करने का प्रस्ताव शामिल हैं। साथ ही रिंग रोड और स्टेट हाइवे पर पार्षदों की आवाजाही टोल मुक्त हो।

### संसद सत्र से पहले होगी साधारण सभा

29 जनवरी से संसद सत्र शुरू होगा। ऐसे में 28 जनवरी को निगम की साधारण सभा बुलाने का निर्णय लिया है। निगम के सभी 150 पार्षदों से सुझाव मांगे गए थे। उन्हीं सुझावों में से सभा का एजेंडा तैयार किया गया है।

सौम्या गुर्जर, महापौर ग्रेटर निगम

# हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय समाचारों में

## हुडको ने दी लोन की मंजूरी, अब राज्य सरकार की हां का इंतजार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

**जयपुर.** आर्थिक तंगी से जूझ रहे राजधानी के दोनों नगर निगमों को हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हुडको) से लोन की स्वीकृति मिल गई है। अब राज्य सरकारी की हां का इंतजार है। निगम अधिकारियों की मानें तो राज्य सरकार गारंटी देगी और उसके बाद दोनों निगमों को हुडको से लोन मिल जाएगा। हालांकि, इससे पहले लोन लेने को लेकर वित्त विभाग के सवालों के जवाब भी दोनों शहरी सरकार के अधिकारियों को तलाशने होंगे। वित्त विभाग ने पूछा है कि निगम इन लोन को कैसे चुकाएगा और गारंटी कौन देगा?

गुरुवार को ग्रेटर नगर निगम के लिए 365 करोड़ रुपए और हैरिटेज के लिए 200 करोड़ रुपए लोन की स्वीकृति हुडको की ओर से दे दी गई। हुडको के रीजनल हैड सुधीर भटनागर ने दोनों निगम मुख्यालय में जाकर स्वीकृति पत्र भी सौंप दिए। उन्होंने बताया कि पहले दो वर्ष तक लोन की कोई किश्त नहीं देनी होगी। सिर्फ ब्याज ही देना होगा।

**इनमें होगा बजट खर्च:** सभी तरह के निर्माण कार्य, सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट को अपडेट करने के अलावा सड़क निर्माण, फुटपाथ को बनाने से लेकर उनका सौंदर्यीकरण, मोक्षधाम का रखरखाव, पार्कों का सौंदर्यीकरण इलेक्ट्रिफिकेशन वर्क के काम होंगे।

**चुकाएंगे देनदारियां:** हुडको से लोन की स्वीकृति मिलने के साथ ही दोनों निगमों की महापौर ने खुशी जाहिर की है। मौजूदा स्थिति की बात करें तो निगमों की आर्थिक स्थिति खराब है। जो लोन मिलेगा उससे देनदारियां चुकाई जाएंगी और बंद पड़े काम फिर से शुरू किए जाएंगे।

### देनदारियां चुकाएंगे

लोन के लिए हुडको से स्वीकृति दी है। पहली किश्त के रूप में 100 करोड़ रुपए लेंगे। अभी वित्त विभाग के सवालों के जवाब देने हैं। 250 करोड़ रुपए की देनदारियां बकाया है। जो पैसा लोन के रूप में मिलेगा उसको निगम के संसाधनों से चुकाया जाएगा।

**सौम्या गुर्जर,** महापौर, ग्रेटर

जो लोन मिलेगा उससे विकास कार्य को गति मिलेगी। आवश्यकता के अनुसार लोन लिया जाएगा। अभी निगम को 200 करोड़ की ही जरूरत है। आगे जब जरूरत पड़ेगी तो लोन के लिए फिर से आवेदन करेंगे।

**मुनेश गुर्जर,** महापौर, हैरिटेज

---

Printed from THE TIMES OF INDIA

## Rajasthan's heritage gets Rs 200 crore as first installment from HUDCO

TNN | Apr 2, 2021, 04:27 AM IST

JAIPUR: JMC-Heritage on Thursday received Rs 200-crore loan from HUDCO on Thursday. The civic body had applied for Rs 500-crore loan to meet with its requirements. HUDCO regional head Sudhir Bhatnagar came to JMC-Heritage headquarters and handed over the cheque to mayor Munesh Gurjar.

Gurjar said, "Our priority is to start the works related to gardens, sewerage lines and drainage system. For now, we have availed only Rs 200 crore as we want to utilise the funds in a systematic way. If we had taken the entire amount in one go, the interest would have been higher. We decided our priority on spending the amount."

There is a liability of over Rs 200 crore on JMC, Heritage including unpaid bills of contractors. The civic work contractors were on strike in both Heritage and Greater for more than six months. JMC, Heritage somehow cajoled the contractors by agreeing to pay a minimum Rs 25 lakh to each and resumed the civic work. The contractors, however, are still on strike in Greater.

Sudhir Bhatnagar, regional head, HUDCO, said the development proposal given by JMC, Heritage was as per National Green Tribunal's guidelines. "We have approved the loan and development work will soon start in the city. In the first two years, only interest on the Rs 200 crore loan will be paid by JMC, Heritage and after that loan re-payment will start on quarterly basis," said Bhatnagar.

Loan for similar amount was applied by JMC, Greater as well and they have sanctioned Rs 300 crore.

---

## Heritage gets ₹200cr loan from HUDCO

**ESTIMATED COST OF VARIOUS PROJECTS**

| WORKS | AMOUNT |
|---|---|
| Construction of roads and drains | 195 crore |
| Construction of footpaths | 38.86 crore |
| Sewerage missing links | 67.93 crore |
| Electrification work | 37 crore |
| Development of parks | 31.10 crore |
| Interest during construction period | 18 crore |
| **Total Cost** | **388 crore** |
| Loan Amount Sanctioned | 200 crore |

TIMES NEWS NETWORK

***Jaipur:** JMC-Heritage on Thursday received Rs 200-crore loan from HUDCO on Thursday.*

The civic body had applied for Rs 500-crore loan to meet with its requirements. HUDCO regional head Sudhir Bhatnagar came to JMC-Heritage headquarters and handed over the cheque to mayor Munesh Gurjar.

Gurjar said, "Our priority is to start the works related to gardens, sewerage lines and drainage system. For now, we have availed only Rs 200 crore as we want to utilise the funds in a systematic way. If we had taken the entire amount in one go, the interest would have been higher. We decided our priority on spending the amount."

There is a liability of over Rs 200 crore on Heritage including unpaid bills of contractors. The civic work contractors were on strike in both Heritage and Greater for more than six months. JMC, Heritage somehow cajoled the contractors by agreeing to pay a minimum Rs 25 lakh to each and resumed the civic work. The contractors, however, are still on strike in Greater.

Sudhir Bhatnagar, regional head, HUDCO, said the development proposal given by JMC, Heritage was as per National Green Tribunal's guidelines.

---

2 राजधानी

## हुडको ने ग्रेटर निगम को 365 व हैरिटेज को 200 करोड़ का लोन देने पर सहमति जताई

### हालांकि राज्य सरकार की मंजूरी मिलने के बाद ही दोनों नगर निगमों को लोन मिल सकेगा

-कार्यालय संवाददाता-

**जयपुर।** आर्थिक तंगी से जूझ रहे नगर निगम ग्रेटर व हैरिटेज को क्रमशः 365 करोड़ और 200 करोड़ रुपये का ऋण देने पर हुडको ने अपनी सहमति दे दी है। हालांकि जब तक राज्य सरकार की मंजूरी नहीं मिल जाती, तब तक यह ऋण राशि दोनों ही निगमों को नहीं मिल सकेगी। गुरूवार को हुडको के प्रतिनिधियों ने महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर व मुनेश गुर्जर से मुलाकात करके ऋण देने की हामी भरी है। साथ ही लोन स्वीकृति के दस्तावेजों और कागजी कार्रवाई की जानकारी दी है।

ज्ञात रहे कि पिछले दिनों ग्रेटर व हैरिटेज निगम की पहली बोर्ड बैठक में हुडको से 500-500 करोड़ रुपये का ऋण लेने का प्रस्ताव पास किया गया था। उसके बाद से

महापौर डॉ. सौम्या

महापौर मुनेश गुर्जर

यह तैयारी चल रही थी। हालांकि अभी तक यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल से ऋण स्वीकृति की फाइल पास होने के बाद वित्त विभाग में भेजी जायेगी, इसके बाद सरकार की गारंटी पर हुडको के द्वारा ऋण की यह राशि दी जायेगी।

हालांकि ग्रेटर नगर निगम की महापौर डॉ. सौम्या ने तो साफ-साफ कह दिया है कि

- **महापौर डॉ. सौम्या का कहना है कि फिलहाल 100 करोड़ रु. की पहली किश्त ही लेंगे, ताकि ग्रेटर निगम पर बेवजह कर्जा न हो।**
- **महापौर मुनेश गुर्जर ने फिलहाल यह खुलासा तो नहीं किया है कि 200 करोड़ के ऋण की पूरी रकम ली जायेगी, या फिर आधी। सिर्फ इतना कहा है हुडको से लोन मिलता है तो शहर में सीवरेज, सड़क निर्माण व फुटपाथ मरम्मत जैसे जरूरी कार्य करवा सकेंगे**

सरकार से लोन की स्वीकृति मिलने के बाद भी जरूरत के मुताबिक ही ऋण लेंगे। ताकि ग्रेटर निगम में बेवजह का आर्थिक भार नहीं पड़े। फिलहाल 100 करोड़ रुपये की पहली किश्त मांगी जायेगी। ताकि शहर में अटके विकास कार्यों को गति दे सके। पहली प्राथमिकता नगर निगम के राजस्व को बढ़ाने पर फोकस है। जितना ज्यादा बकाया टैक्स हम वसूल पाएंगे, उतना ही लोन कम लेना पड़ेगा। उधर हैरिटेज नगर निगम की महापौर मुनेश गुर्जर ने अभी तक जाहिर नहीं किया है कि पूरा 200 करोड़ का लोन लिया जायेगा, या फिर आधी रकम। उन्होंने सिर्फ इतना कहा है कि हुडको से लोन मिलने के बाद सड़क निर्माण, सीवरेज, फुटपाथ, उद्यान रखरखाव व मरम्मत जैसे कार्य समय पर हो सकेंगे।

हडको

## जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय

## हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित कम्पनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
हडको भवन, विद्युत मार्ग, ज्योति नगर, जयपुर – 302005
दूरभाषः 0141–.2740874, 2740863
टैलीफैक्सः 0141–2740702, ई–मेल **jro@hudco.org**

## पंजीकृत कार्यालय

## हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित कम्पनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
हडको भवन, भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110 003
दूरभाषः 24649610–23, 24627113–15, वेबसाईट **www.hudco.org**
फैक्सः 24625308